

श्री कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ॥

❖ सागर ❖

श्री किताब आठों सागर मूल मिलावे के लिखे हैं

सागर पेहेला नूर का

भोम तले की क्यों कहूं, विस्तार बड़ो अतंत ।
नेक नेक निसान दिए हादियों, मैं करूं सोई सिफत ॥१॥
चौसठ थंभ चबूतरा, दरवाजे तखत बरनन ।
रूह मोमिन होए सो देखियो, करके दिल रोसन ॥२॥
मेयराज हुआ महंमद पर, पोहोंच्या हक हजूर ।
सो साहेदी दर्ई महंमदे, सो मोमिन करें मजकूर^१ ॥३॥
सो रूहें अर्स दरगाह^२ की, कही महंमद बारे हजार ।
दे साहेदी गिरो महंमदी, जाको वतन नूर के पार ॥४॥
हुकम से अब केहेत हों, सुनियो मोमिन दिल दे ।
हक सहूरें विचारियो, हकें सोभा दर्ई तुमें ए ॥५॥
हकें अर्स किया दिल मोमिन, सो मता आया हक दिल सैं ।
तुमें ऐसी बड़ाई हकें लिखी, हाए हाए मोमिन गल ना गए इन में ॥६॥

नूर सिफत द्वार सनमुख, और नूर द्वार पीछल ।
 एक दाएँ बाएँ एक, हुआ बेवरा चारों मिल ॥७॥
 सोभित द्वार सनमुख का, नूर थंभ पाच के दोए ।
 थंभ नीलवी दो इनों लगते, सोभा लेत अति सोए ॥८॥
 इन सामी द्वार पीछल, थंभ दोए नीलवी के ।
 दो थंभ जो इनों लगते, नूर पाच के थंभ ए ॥९॥
 नूर द्वार थंभ दो मानिक, तिन पासे दो पुखराज ।
 ए द्वार तरफ दाहिनी, रह्या नूर इत बिराज ॥१०॥
 तरफ बाईं द्वार पुखराजी, दो मानिक थंभ तिन पास ।
 चार थंभ नूर सरभर, ए अदभुत नूर खूबी खास ॥११॥
 नूर चारों पौरी बराबर, जो करत हैं झलकार ।
 ए जुबां खूबी तो कहे, जो पाइए काहूं सुमार ॥१२॥
 थंभ बारे बारे चारों खांचों, कहूं तिनका बेवरा कर ।
 बारे नंग चार धात के, रंग जुदे जोत बराबर ॥१३॥
 नेक देखाए रंग अर्स के, कई खूबी रंग अलेखे ।
 रूह सहूर करे हक इलमें, हक देखाएँ देखे ॥१४॥
 असल पांच नाम रंग के, नीला पीला लाल सेत स्याम ।
 एक एक रंग में कई रंग, सो क्यों कहे जाए बिना नाम ॥१५॥
 देखो चौसठ थंभ चबूतरा, रंग नंग अनेक अर्स ।
 नाम लिए न जाए रंगो के, रंग एक पे और सरस ॥१६॥
 मैं तो नाम लेत जवेरों, जानों बोहोत नाम लिए जाए ।
 नंग नाम धात कहे बिना, रंग नाम आवे ना जुबांए ॥१७॥
 एकै रस के सब रंग, करें जुदे जुदे झलकार ।
 रंग नंग धात तो कहिए, जो आवे कहूं सुमार ॥१८॥

पर हिरदे आवनें रूहों के, मैं कई बिध करत बयान ।
 ना तो क्यों कहूं रंग नंग धात की, ए तो खिलवत^१ बका सुभान ॥१९॥
 अर्स धात ना रंग नंग रेसम, जित नया न पुराना होए ।
 जित पैदा कछू नया नहीं, तित क्यों नाम धरे जाएं सोए ॥२०॥
 हेंम जवेर या जो कछू, सो सब जिमी पैदास ।
 इत नाम पैदास के क्यों कहिए, जित पैदा न नास ॥२१॥
 थंभ और चीज न आवे सब्द में, कर मोमिन देखो सहूर ।
 अर्स बानी देख विचारिए, तब हिरदे होए जहूर ॥२२॥
 नाम निसान इत झूठ है, तो भी तिन पर होत साबूत ।
 जोत झूठी देख नासूत की, अधिक है मलकूत ॥२३॥
 सो मलकूत पैदा फना पल में, कई करत खावंद जबरूत ।
 सो रोसनी^२ निमूना देख के, पीछे देखो अर्स लाहूत ॥२४॥
 इन बिध सहूर जो कीजिए, कछू तब आवे रूह लज्जत ।
 और भांत निमूना ना बनें, ए तो अर्स अजीम खिलवत ॥२५॥
 आगूं नूर-मकान^३ की कंकरी, देखत ना कोट सूर ।
 तिन जिमी नंग रोसनी, सो कैसो होसी नूर ॥२६॥
 ए नूर मकान कह्या रसूलें, आगूं जाए ना सके क्योंए कर ।
 तिन लाहूत में क्यों पोहोंचहीं, जित जले जबरईल पर ॥२७॥
 ए देखो तुम रोसनी, हक अर्स इन हाल ।
 जित पर जले जबरईल, कोई फरिस्ता न इन मिसाल ॥२८॥
 मेयराज हुआ महंमद पर, नेक तिन किया रोसन ।
 अब मुतलक जाहेर तो हुआ, जो अर्स में मोमिनो तन ॥२९॥
 दिल अर्स भी तो कह्या, हकें जान ए निसबत ।
 इन गिरो पर मेयराज तो हुआ, जो दिन ऊग्या हक मारफत ॥३०॥

ए जो अंदर अर्स अजीम के, खिलवत मासूक या आसिक ।
 नूरतजल्ला क्यों कहूं, बका वाहेदत हक ॥३१॥
 इन भांत निमूना लीजिए, करियो हक सहूर मोमिन ।
 तुम ताले आया लदुन्नी, तुम देखो अर्स रोसन ॥३२॥
 ए तुम ताले^१ तो आइया, जो तुम असल खिलवत ।
 निसदिन सहूर एही चाहिए, हक बैठे तुमें खेलावत ॥३३॥
 अब गिन देखो थंभ चौसठ, बीच चारों हिस्सों चार द्वार ।
 नाम रंग नंग तो कहिए, जो कित खाली देखूं झलकार ॥३४॥
 एक जोत सागर सब हो रह्या, और ऊपर तले सब जोत ।
 कई सूर उड़ें आगूं कंकरी, तिन भोम की जोत उद्योत ॥३५॥
 चंद्रवा दुलीचा तकिए, सब जोतै का अंबार^२ ।
 जित देखों तित जोत में, नूर क्यों कहूं लेहेरें अपार ॥३६॥
 दो दो नंग थंभों के बीच में, बिना नूर न पाइए ठौर ।
 दिवाल बंधाई नूर की, क्यों कहूं रंग नंग और ॥३७॥
 बीच खाली जित जाएगा, तित लरत थंभों का नूर ।
 उत जंग होत नंगन की, तित अधिक नूर जहूर ॥३८॥
 नूर नूर सब एक हो गई, एक दूजी को खेंचत ।
 दूनी जोत बीच खाली मिनें, रंग क्यों गिने जाए इत ॥३९॥
 जिमी जात भी रूह की, रूह जात आसमान ।
 जल तेज वाए सब रूह को, रूह जात अर्स सुभान ॥४०॥
 पसु पंखी या दरखत, रूह जिनस हैं सब ।
 हक अर्स वाहेदत^३ में, दूजा मिले ना कछुए कब ॥४१॥
 दूजा तो कछू है नहीं, दूजी है हुकम कुदरत ।
 सो पैदा फना देखन की, फना मिले न माहें वाहेदत ॥४२॥

जो कछुए चीज अर्स में, सो सब वाहेदत माहें ।
 जरा एक बिना वाहेदत, सो तो कछुए नाहें ॥४३॥
 ए खिलवत हक नूर की, नूर आला^१ नूर मकान ।
 बिछौना सब नूर का, सब नूरै का सामान ॥४४॥
 नूर चंद्रवा क्यों कहूं, नूरै की झालर ।
 तले तरफें सब नूर की, देखो नूरै की नजर ॥४५॥
 रूहें मिलावा नूर में, बीच कठेड़ा नूर भर ।
 थंभ तकिए सब नूर के, कछू और ना नूर बिगर ॥४६॥
 तखत सोभित बीच नूर का, नूर में जुगल किसोर ।
 बैठे हक बड़ी रूह नूर में, नूर सोभा अति जोर ॥४७॥
 नूर सख्य रूप नूर के, नूर वस्तर भूखन ।
 सोभा सुन्दरता नूर की, सब नूरै नूर रोसन ॥४८॥
 गुन अंग इंद्री नूर की, नूरै बान वचन ।
 पिंड प्रकृत सब नूर की, नूरै केहेन सुनन ॥४९॥
 रूहें बड़ी रूह नूर में, नूर हक के सदा खुसाल ।
 हक नूर निसदिन बरसत, नूर अरस-परस नूरजमाल ॥५०॥
 नाम ठाम सब नूर के, कहूं जरा ना नूर बिन ।
 मोहोल मन्दिर सब नूर के, माहें बाहेर नूर पूरन ॥५१॥
 अर्स भोम सब नूर की, नूरै के थंभ दिवाल ।
 द्वार बार कमाड़ी नूर के, नूर गोख^२ जाली पड़साल ॥५२॥
 मेहेराव झरोखे नूर के, जरे जरा सब नूर ।
 अर्स माहें बाहेर सब नूर में, नूर नजीक नूर दूर ॥५३॥
 नूर नाम रोसन का, दुनी जानत यों कर ।
 सो तो रोसनी जिद अंधेर की, दुनी क्या जाने लदुन्नी^३ बिगर ॥५४॥

तले भोम चबूतरा, बैठा हक मिलावा इत ।
 हक हादी ऊपर बैठ के, गिरो को खेलावत ॥५५॥
 अर्स मता अपार है, दिल में न आवे बिना सुमार ।
 तार्थें ल्याऊं बीच हिसाब के, ज्यों रूहें करें विचार ॥५६॥
 अर्स नहीं सुमार में, सो हक ल्याए माहें दिल मोमिन ।
 बेसुमार ल्याए सुमार में, माहें आवने दिल रूहन ॥५७॥
 इत फिरते साठ मन्दिर, तिन बीच गलियां चार ।
 चारों तरफों देखिए, जानों जोतै का अंबार^१ ॥५८॥
 चौकठ ताके घोड़ले, और दिवालों चित्रामन ।
 सोभा क्यों कहूं जोत में, भर्यो नूर रोसन ॥५९॥
 दिवालों चित्रामन, कई जोत उठें तरंग ।
 साम सामी ले उठत, करत माहों माहें जंग ॥६०॥
 बिरिख बेली कई जवेर की, सकल वनस्पति ।
 नकस कटाव केते कहूं, बनी पसु पंखी जात जेती ॥६१॥
 देख देख के देखिए, सोभा अति सुन्दर ।
 जैसी देखियत दिवालों, तिनसे अधिक अन्दर ॥६२॥
 अधिक चित्रामन अन्दर, क्या क्या देखों इत ।
 जिनको देखों निरख के, जानों एही अधिक सोभित ॥६३॥
 अन्दर कई वस्तां धरी, कई सेज्या चौकी सन्दूक ।
 जित सोभा जो लेत है, तित देखिए तिन सलूक^२ ॥६४॥
 कई सीसे प्याले डब्बे, कई अन्दर गिरद देखत ।
 कई तबके^३ छोटी बड़ियां, कई सीकियां^४ लटकत ॥६५॥
 अन्दर की वस्तां क्यों कहूं, और क्यों कहूं चित्रामन ।
 जो मन्दिरों अन्दर देखिए, तो दिल होवे रोसन ॥६६॥

बार-साखें द्वार ने, सोभें साठों मन्दिरों के ।
 सोभें गिरदवाए बराबर, एक एक पें अधिक सोभा ले ॥६७॥
 बारीक इन कमाड़ियों, अनेक चित्रामन ।
 रंग नंग या तखतें, ए सब जवेर चेतन ॥६८॥
 ना चितारे चेतरी, ना घड़ी^१ ना किन समारी ।
 ए अर्स जिमी थंभ मोहोलातें, या दिवालें या द्वारी ॥६९॥
 किनार दिवालें द्वार ने, लाल दोरी दोए दोए ।
 मन्दिर मन्दिर की हद लग, सोभा लेत अति सोए ॥७०॥
 दोरी लगती कांगरी, सब ठौरों गिरदवाए ।
 चित्रामन तिनके बीच में, जो देखों सो अधिक सोभाए ॥७१॥
 साठों तरफों मन्दिर, नई नई जुदी जुगत ।
 ए साठों फेर के देखिए, सोभा और पे और अतंत ॥७२॥
 क्यों कहूं जुगत अंदर की, क्यों कहूं जुगत बाहेर ।
 जित देखों तित लग रहों, जानों नजरों आवे जाहेर ॥७३॥
 उपली भोम चढ़न को, सीढ़ियां अति सोभित ।
 नई नई तरह नए रंगों, सामी जोतें जोत उठत ॥७४॥
 सीढ़ियां अति झलकत, जब सखियां उतर चढ़त ।
 प्रतिबिंब सखियों सोभित, पड़घा^२ मीठे स्वर उठत ॥७५॥
 स्वर भूखन के बाजत, मीठे अति रसाल ।
 इनकी सोभा क्यों कहूं, जाको खावंद नूरजमाल ॥७६॥
 सीढ़ियां अति सोभित, माहें मंदिरों सबन ।
 कहूं कहूं देहेलान में, जो जित सो तित रोसन ॥७७॥
 दो दो थंभ आगूं द्वारने, तिन आगूं दूसरी हार ।
 ए थंभ अति बिराजत, सोभा नाहीं सुमार ॥७८॥

चार हांस^१ तले थंभ के, आठ ऊपर तिन ।
 सोले बीच आठ तिन पर, और चार ऊपर इन ॥७९॥
 इन बिध हांस थंभन की, माहें नकस कई कटाव ।
 जुदी जुदी जुगतों चित्रामन, माहें जुदे जुदे कई भाव ॥८०॥
 एक एक रंग का जवेर, उसी जवेर में नकस ।
 जुदे जुदे कई कटाव, एक दूजे पे सरस ॥८१॥
 इनके बीच चबूतरा, इत कठेड़ा गिरदवाए ।
 ए खूबी इन चबूतरे, इन जुबां कही न जाए ॥८२॥
 तो भी नेक कहूं मैं इन की, जो आए चढ़त है चित्त ।
 ए जो बैठक खावंद की, सो नेक कहूं सिफत ॥८३॥
 भोम उज्जल कई नकस, कहा कहूं जिमी इन नूर ।
 जानों कोटक उदे भए, अर्स के सीतल सूर ॥८४॥
 फिरते थंभ जो चौसठ, चारों तरफों द्वार ।
 दो दो सीढ़ी आगूं द्वारने, सोभित हैं अति सार ॥८५॥
 कई थंभ हैं मानिक के, कई पाच कई पुखराज ।
 नूर रोसन एक दूसरे, मिल जोतें जोत बिराज ॥८६॥
 कई लसनियां नीलवी, एक थंभ एक रंग ।
 यों फिरते थंभ नंगन के, जुदे जुदे सब नंग ॥८७॥
 सोले थंभों कठेड़ा, यों थंभ कठेड़ा किनार ।
 कठेड़ा थंभों लगता, सोले सोले तरफ चार ॥८८॥
 थंभ थंभ को देखत, ज्यों सूर के सामी सूर ।
 बढ़त है बीच रोसनी, क्यों कहूं नूर को नूर ॥८९॥
 यों थंभ थंभ जोत में, देखो सबन का जहूर ।
 ऊपर तले सब जोत में, जम्या नूर भरपूर ॥९०॥

ऊपर चंद्रवा थंभों लगता, तले जेता चबूतर ।
 जड़ाव ज्यों अति झलकत, एता ही इन पर ॥९१॥
 कई रंगों के जवेर, करत जोत अपार ।
 कई बेल फूल पात नकस, ए सिफत न आवे सुमार ॥९२॥
 बिछौना बिछाइया, करत दुलीचा जोत ।
 फल फूल पात नकस, कई उठत तरंग उद्योत ॥९३॥
 चारों तरफों दुलीचा, फिरता बिछाया भर कर ।
 चबूतरे लग कठेड़ा, सोभा अति सुन्दर ॥९४॥
 क्यों कहूं रंग दुलीचे, फिरती दोरी चार ।
 स्याम सेत हरी जरद, ए फिरती जोत किनार ॥९५॥
 कई विध के कटाव, कई बिरिख बेल नकस ।
 पात फूल बीच फिरते, और पे और सरस ॥९६॥
 लग कठेड़े तकिए, क्यों कहूं तकियों रंग ।
 बारे हजार दाब बैठियां, एक दूजे के संग ॥९७॥
 बैठक दोऊ सिंघासन, चार पाए एक तखत ।
 पीछल तकिए दोऊ जुदे, रख्या ऊपर दुलीचे इत ॥९८॥
 मोती रतन मानिक, हीरे हेम पाने पुखराज ।
 गोमादिक पाच पिरोजा परवाल, रहे कई रंग नंग धात बिराज ॥९९॥
 नंग नाम केते कहूं, कहूं केती अर्स धात ।
 बरनन तखत अर्स का, कहे जुबां सुपन नंग जात ॥१००॥
 चार थंभ चार खूंट के, छत्री सोभा अति जोर ।
 जो कदी नैनों देखिए, तो झूठे तन बंध देवे तोर ॥१०१॥
 पीछल तकिए दोऊ तरफों, बीच चढ़ती कांगरी चार ।
 फूल पात बेल कटाव कई, जुबां कहा कहे नकस अपार ॥१०२॥

दोऊ छेड़ों में थंभ दोए, बीच तीसरा सरभर ।
 तिन गुल पर गुल कटाव, नूर रोसन सोभा सुन्दर ॥१०३॥
 जो बरनन करूं पूरे पात को, तो चल जाए काहू उमर ।
 तो पात न होवे बरनन, ए अर्स तखत यो कर ॥१०४॥
 एक पात कई बेल कांगरी, बेल फूल पात कटाव ।
 तिन बेलों पात कई बेलें, ऐसे बारीक अति जड़ाव ॥१०५॥
 एक नंग बारीक इत देखिए, ताकी जोत न माए आसमान ।
 अपार जरे अर्स की, ना आवे माहें जुबान ॥१०६॥
 दोऊ तरफों सिंघासन के, बगलों तकिए दोए ।
 बारीक तिन कटाव कई, ए बरनन कैसे होए ॥१०७॥
 ऊपर छत्रियां क्यों कहूं, कई रंग नंग जोत किनार ।
 कई दोरी बेली कांगरी, सोभा फिरती तरफ चार ॥१०८॥
 चार थंभ जो पाइयों पर, तिन में बेली अनेक ।
 रंग नंग बारीक अलेखे, तिनको क्यों कर होए विवेक ॥१०९॥
 चार खूने के चार नकस, कई कांगरी कटाव फूल ।
 बीच पांखड़ी फिरती फूल ज्यों, ए अर्स तखत इन सूल ॥११०॥
 फूल कटाव कई बीच में, कई विध के नकस ।
 इन के बीच में मानिक, गिरदवाए नीलवी सरस ॥१११॥
 दोऊ सरूपों ऊपर, दो फूल ज्यों बिराजत ।
 देखी और अनेक चित्रामन, पर अचरज एह जुगत ॥११२॥
 दोए कलस दोए छत्रियों, छे कलस गिरदवाए ।
 ए आठ कलस हैं हेम के, सुन्दर अति सोभाए ॥११३॥
 जोर करे जोत जवेर, ऊपर हक तखत ।
 ए नूर जिमी आसमान में, रोसन बढ्यो अतंत ॥११४॥

सो ए धरुया इत तखत, जानों नजर ना छोड़ूं खिन ।
 पल न चाहे बीच आवने, ऐसी सोभा तखत बीच इन ॥११५॥
 एक गादी दोए चाकले, पीछल वाही जिनस ।
 चौखूने कटाव कई पसमी^१, जो देखों सोई सरस ॥११६॥
 किनार बाएं बीच जवेर के, और रोसन बेसुमार ।
 ए तखत नूरजमाल का, अर्स सब चीजों अपार ॥११७॥
 इन सिंघासन ऊपर, बैठे जुगल किसोर ।
 वस्तर भूखन सिनगार, सुन्दर जोत अति जोर ॥११८॥
 एक जोत जुगल की, और बीच बैठे सिंघासन ।
 बल बल जाऊं मुखारबिंद की, और बलि बलि जाऊं चरन ॥११९॥
 कहा कहूं जोत रूहन की, और समूह भूखन वस्तर ।
 ए कही जोत पूरन सिंध की, जो अव्वल नूर सागर ॥१२०॥
 ए सागर भर पूरन, तेज जोत को गंज ।
 कई इन सागर लेहें उठें, पूरन नूर को पुंज ॥१२१॥
 महामत कहे सिंध दूसरा, सोभा सरूप रूहन ।
 ए सुखकारी अति सुन्दर, ए बका वतन बीच तन ॥१२२॥
 ॥प्रकरण॥१॥चौपाई॥१२२॥

सागर दूसरा रूहों की सोभा

हक बैठे रूहों मिलाए के, खेल देखावन काज ।
 बड़ी भई रदबदल^२, रूहें बड़ी रूहसों राज ॥१॥
 देखन खेल जुदागीय का, दिल में लिया रूहन ।
 हक आप बैठे तखत पर, खेल रूहों को देखावन ॥२॥
 देहेसत सबों जुदागीय की, पर खेल देखन की चाह ।
 देखें पातसाही हककी, देखें इस्क बड़ा किन का ॥३॥

एह जोत जो जोत में, बैठियां ज्यों सब मिल ।
 क्यों कहूं सोभा इन जुबां, बीच सुन्दर जोत जुगल ॥४॥
 सुन्दर साथ भराए के, बैठियां सरूप एक होए ।
 यों सबे हिल मिल रहीं, सरूप कहे न जावें दोए ॥५॥
 एक सरूप होए बैठियां, माहें वस्तरों कई रंग ।
 क्यों ए बरनन होवहीं, रंग रंग में कई तरंग ॥६॥
 देखो अंतर आंखें खोल के, तो आवे नजरों विवेक ।
 बरनन ना होवे एक को, गलगल सों लगी अनेक ॥७॥
 एक सागर कह्यो तेज जोत को, दूजो सोभा सुन्दर ।
 कई तरंग उठें इन रंगों के, खोल देखो आँख अंदर ॥८॥
 ए मेला बैठा एक होए के, रूहें एक दूजी को लाग ।
 आवे ना निकसे इतथें, बीच हाथ न अंगुरी माग' ॥९॥
 गिरदवाए तखत के, कई बैठियां तले चरन ।
 जानों जिन होवें जुदियां, पकड़ रहे हम सरन ॥१०॥
 चबूतरे लग कठेड़ा, रहियां चारों तरफों भराए ।
 ज्यों मिल बैठियां बीच में, योंही बैठियां गिरदवाए ॥११॥
 एक दूजी को अंक भर, लग रहियां अंगों अंग ।
 दिल में खेल देखन का, है सबों अंगों उछरंग ॥१२॥
 जाने जिन कोई जुदी पड़े, ए डर दिल में ले ।
 मिल कर बैठियां एक होए, बड़ी अचरज बैठक ए ॥१३॥
 अतंत सोभा लेत हैं, कबूं ना बैठियां यों कर ।
 यों बैठियां भर चबूतरे, दूजा सोभा अति सागर ॥१४॥
 माहें ऊँची नीची कोई नहीं, सब बैठियां बराबर ।
 अंग सकल उमंग में, खेल देखन को चाह कर ॥१५॥

सोभा सुन्दरता अति बड़ी, हक बड़ी रूह अरवाहें ।
 ए सोभा सागर दूसरा, मुख कह्यो न जाए जुबांए ॥१६॥
 अर्स अरवाहों मुख की, जुबां कहा करे बरनन ।
 नैन श्रवन मुख नासिका, सोभा सुन्दर अति घन ॥१७॥
 गौर रंग लालक लिए, सोभा सुन्दरता अपार ।
 जो एक अंग बरनन करूँ, वाको भी न आवे पार ॥१८॥
 मुख चौक छवि की क्यों कहूं, सोभा हरवटी^१ दंत अधूर ।
 बीच लांक^२ मुसकनी कहां लग, केहे केहे कहूं मुख नूर ॥१९॥
 साड़ी चोली चरनी, जड़ाव रंग झलकार ।
 कई जवेर केते कहूं, सोभा सागर सुखकार ॥२०॥
 रूहें बैठी हिल मिल के, याके जुदे जुदे वस्तर ।
 केते रंग कहूं साड़ियों, निपट बैठियां मिल कर ॥२१॥
 कई साड़ी रंग सेत की, कई साड़ी रंग नीली ।
 कई साड़ी रंग लाल हैं, कई साड़ी रंग पीली ॥२२॥
 एक लाल माहें कई रंग, और कई रंग नीली माहें ।
 कई रंग पीली कई सेत में, कई रंग क्यों कहूं जुबांए ॥२३॥
 मैं नाम लेत रंगों के, कहूं केते लाल माहें एक ।
 एक नाम नीला कहूं, माहें नीले रंग अनेक ॥२४॥
 इन विध कई रंग वस्तरों, ए बरन्यो क्यों जाए ।
 तिन में भी जुदियां नहीं, सब बैठियां अंग मिलाए ॥२५॥
 अनेक रंगों साड़ियां, माहें कई बिरिख बेली पात ।
 फल फूल नकस कटाव कई, ताथें बरन्यो न जात ॥२६॥
 कई रंग कहूं वस्तरों, के कहूं जवेरों रंग ।
 इन विध रंग अनेक हैं, ताके उठें कई तरंग ॥२७॥

कई किरने उठें कंचन की, कई किरने हीरन ।
 पाच पांने^१ मोती मानिक, किरने जाए न कही जवेरन ॥२८॥
 सो किरने लगे जाए ऊपर, और द्वार दिवालों थंभन ।
 आवें उतथें किरने सामियां, माहों माहें जंग करें रोसन ॥२९॥
 और चोली जो चरनियां, सब अंग में रहे समाए ।
 बरनन न होए एक अंग को, तामें बैठियां सब लपटाए ॥३०॥
 हेम हीरा मोती मानिक, कई रंगों के हार ।
 पाच पांने नीलवी लसनिए, कई जवेरों अंबार ॥३१॥
 सोभा अतंत है भूखनों, स्वर बाजत हाथ चरन ।
 मीठी बानी अति नरमाई, खुसबोए और रोसन ॥३२॥
 वस्तर भूखन सब अंगों, क्यों कहूं केते रंग ।
 एक एक नंग के अनेक रंग, तिन रंग रंग कई तरंग ॥३३॥
 निलवट^२ श्रवन नासिका, सिर कंठ उर कई हार ।
 हाथ पांउं चरन भूखन, अति अलेखे सिनगार ॥३४॥
 जो होवें अरवा अर्स की, सो लीजो कर सहूर ।
 अंग रंग नंग सब जंग में, होए गयो एक जहूर ॥३५॥
 महामत कहे बैठियां देख के, हक हँसत हैं हम पर ।
 कहें देखो इन बिध खेल में, भेलियां रहें क्यों कर ॥३६॥
 ॥प्रकरण॥२॥चौपाई॥१५८॥

ढाल दूसरा इसी सागर

लेहेरी सुख सागर की, लेसी रूहें अर्स ।
 याके सरूप याको देखसी, जो हैं अरस परस ॥१॥
 ए जो सरूप सुपन के, असल नजर बीच इन ।
 वह देखें हमको ख्वाब में, वह असल हमारे तन ॥२॥

उनों अंतर आंखें तब खुलें, जब हम देखें वह नजर ।
 अंदर चुभे जब रूह के, तब इतहीं बैठे बका घर ॥३॥
 सुरत उनों की हम में, ए जुदे जुदे हुए जो हम ।
 ए जो बातें करें हम सुपन में, सो करावत हक हुकम ॥४॥
 इन विध हक का इलम, हमको जगावत ।
 इलम किल्ली^१ हमको दर्ई, तिनसे बका द्वार खोलत ॥५॥
 बीच असल तन और सुपने, पट नींदै का था ।
 सो नींद उड़ाए सुपना रख्या, ए देखो किया हक का ॥६॥
 ना तो नींद उड़े पीछे सुपना, कबलों रहेवे ए ।
 इन विध सुपना ना रहे, पर हुआ हाथ हुकम के ॥७॥
 हुकमें खेल देखाइया, जुदे डारे फरामोसी^२ दे ।
 खेल में जगाए इलमें, अब हुकम मिलावे ले ॥८॥
 बात पोहोंची आए नजीक, अब जो कोई रहेवे दम ।
 उमेदां तुमारी पूरने, राखी खसमें तुम हुकम ॥९॥
 जो रूहें अर्स अजीम की, सो मिलियो लेकर प्यार ।
 ए बानी देख फजर की, सबे हूजो खबरदार ॥१०॥
 अब फरामोसी क्यों रहे, जब खुल्या बका द्वार ।
 रूबरू^३ किए हमको, तन असल नूर के पार ॥११॥
 बैठी थीं डर जिनके, सब हिल मिल एक होए ।
 हुकम हक के कौल^४ पर, उलट तुमको जगावे सोए ॥१२॥
 ना तो सुपन के सरूप जो, सो तो खेलै को खेंचत ।
 सो हुकमें तुमें सुपना, हक को मिलावत ॥१३॥
 यों सीधी उलटीय से, कौन करे बिना इलम ।
 इत जगाए उमेदां पूरन कर, खेंचत तरफ खसम ॥१४॥

ए होत किया सब हुकम का, ना तो इन विध क्यों होए ।
जाग सुपना मूल तन का, जगाए हुकम मिलावे सोए ॥१५॥
सो सुध आपन को नहीं, जो विध करत मेहेरवान ।
ना तो कई मेहेर आपन पर, करत हैं रहेमान ॥१६॥
महामत कहे मेहेर की, रूहों आवे एक नजर ।
तो तबहीं रात को मेट के, जाहेर करें फजर ॥१७॥

॥प्रकरण॥३॥चौपाई॥१७५॥

सागर तीसरा एक दिली रूहन की

अब कहूं सागर तीसरा, मूल मेला बिराजत ।
रूह की आंखों देखिए, तो पाइए इनों सिफत ॥१॥
अर्स की अरवाहें जेती, जुदी होए ना सकें एक खिन ।
ए माहें क्यों होएं जुदियां, असल रूहें एक तन ॥२॥
इन सबन की एक अकल, एक दिल एक चित्त ।
एक इस्क इनों का, सनेह कायम हित ॥३॥
इनों दिल सागर तीसरा, एक सागर सबों दिल ।
देखो इनों दिल पैठ के, किन विध बैठियां मिल ॥४॥
हाँस विलास सुख एक है, एक भांत एक चाल ।
तो इन वाहेदत की क्यों कहूं, कौल^१ फैल^२ जो हाल^३ ॥५॥
तो कह्या वाहेदत इनको, अर्स अरवा हक जात ।
ज्यों जोतें जोत उदोत है त्यों, सूरत की सूरत सिफात ॥६॥
इन एक दिली रूहन की, ए क्यों कर कही जाए ।
एक रूह कहे गुझ हक का, दूजी अंग न उमंग समाए ॥७॥
वह सुख केहेवे अपना, जो किया है हक से ।
दिल दूजी के यों आवत, ए सब सुख लिया मैं ॥८॥

एकै बात के वास्ते, सुख दूजी को उपज्या यों ।
 यों सबन की एक दिली, जुदा बरनन होवे क्यों ॥९॥
 एक रूह बात करे हक सों, सुख दूजी को होए ।
 जब देखिए मुख बोलते, तब सुख पावें दोए ॥९०॥
 अरस-परस यों हक सों, आराम लेवें सब कोए ।
 अति सुख पावें बड़ी रूह, ए तिनके अंग सब सोए ॥९१॥
 जो सुख पावत बड़ी रूह, सब तिनके सुख सनकूल ।
 ज्यों जल मूल में सींचिए, पोहोंचे पात फल फूल ॥९२॥
 त्यों सुख जेता हक का, पोहोंचत है बड़ी रूह को ।
 बड़ी रूह का सुख रूहन, आवत है सब मों ॥९३॥
 या भूखन या वस्तर, सिनगार के बखत ।
 एक पेहेने सुख दूजी को यों, सबों सुख होत अतंत ॥९४॥
 या जो बखत आरोगने, या कोई अर्स लज्जत^१ ।
 सो एक रूह से दूसरी, सुख देख केहे पावत ॥९५॥
 ए सुख बातें अर्स की, अलेखे अखंड ।
 क्यों बरनों मैं इन जुबां, बीच बैठ इन इंड ॥९६॥
 मैं नेक कही इन बिध की, सो अर्स में बिध बेसुमार ।
 इन मुख बानी क्यों कहूं, जाको वार न पार ॥९७॥
 तो कह्या रसूल ने, अर्स में वाहेदत ।
 सो कह्या इन माएनो, ए रूहें एक दिल एक चित्त ॥९८॥
 एक रूह सुख लेत है, सुख पावत बारे हजार ।
 तो कही जो चीज अर्स की, सो चीजें चीज अपार ॥९९॥
 जो कोई चीज अर्स में, बाग जिमी जानवर ।
 ताको सुख बल इस्क का, पार न आवे क्यों ए कर ॥१००॥

या पसु या बिरिख^१ कोई, अपार तिनों की बात ।
 तो रूहों के सुख क्यों कहूं, ए तो हैं हक की जात ॥२१॥
 जिन किन को संसे उपजे, खेल देख के यों ।
 ए जो रूहें अर्स की, तिनका इस्क न रह्या क्यों ॥२२॥
 इस्क रूह दोऊ कायम, और कायम अर्स के माहें ।
 क्यों इस्क खोवे आवे क्यों, उत कमी कोई आवत नाहें ॥२३॥
 उत कमी क्यों आवहीं, और रूहें आवें क्यों इत ।
 और इस्क जाए क्यों इनों का, जिन की एती बड़ी सिफत ॥२४॥
 जात हक की कहावहीं, और कहावें माहें वाहेदत ।
 जो इलम विचारे हक का, ता को इस्क बढ़त ॥२५॥
 ए केहेती हों मैं तिन को, कोई संसे ल्यावे जिन ।
 ए अनहोनी हकें करी, वास्ते हाँसी ऊपर रूहन ॥२६॥
 ना तो ए कबहूँ नहीं, जो हक रूहें देखें सुपन ।
 एक जरा अर्स का, उड़ावे चौदे भवन ॥२७॥
 ए हकें हिकमत करी, खेल देखाया झूठ रूहन ।
 पट दे झूठ देखाइया, नैनों देखें बका वतन ॥२८॥
 आड़ा पट दे झूठ देखाइया, पट न आड़े हक ।
 सो हक को हक देखत, हुई फरामोसी रंचक ॥२९॥
 इन विध खेल देखाइया, ना तो रूहें झूठ देखें क्यों कर ।
 अपने तन हकें जान के, करी हाँसी रूहों ऊपर ॥३०॥
 सोभी किया सुख वास्ते, पर अब सुध किनको नाहें ।
 खेल देसी सुख बड़े, जब जागें अर्स के माहें ॥३१॥
 हादी नूर है हक का, और रूहें हादी अंग नूर ।
 इन विध अर्स में वाहेदत, ए सब हक का जहूर ॥३२॥

महामत कहे ए तीसरा, ए जो रूहों दिल सागर ।
अब कहूं चौथा सागर, पट खोल देखो अन्तर ॥३३॥

॥प्रकरण॥४॥चौपाई॥२०८॥

सागर चौथा जुगल^१ किसोर का सिनगार
श्री राजजी का सिनगार पेहेला-मंगला चरन

चौदे तबक की दुनी में, किन कह्या न बका हरफ ।
ए हरफ कैसे केहेवहीं, किन पाई न बका तरफ ॥१॥
आया इलम लदुन्नी, कहे साहेदी एक खुदाए ।
तरफ पाई हक इलमें, मैं बका पोहोंची इन राह ॥२॥
अर्स देख्या रूहअल्ला, हक सूरत किसोर सुन्दर ।
कही वाहेदत की मारफत, जो अर्स के अंदर ॥३॥
नदी ताल बाग जानवर, जो अर्स की हकीकत ।
रूहअल्ला दर्ई साहेदी, हक हादी खास उमत ॥४॥
महंमद पोहोंचे अर्स में, देखी हक सूरत ।
हौज जोए बाग जानवर, कही सब हक मारफत ॥५॥
देखी अमरद^२ जुल्फें^३ हक की, और बोहोत करी मजकूर ।
कही बातें जाहेर बातून, पोहोंच के हक हजूर ॥६॥
ए साहेदी आई इन विध की, कहे खुदा एक महंमद बरहक ।
सो क्यों सुध परे बिना इलम, हक इलमें करी बेसक ॥७॥
महंमद की फुरमान में, कही तीन सूरत ।
बसरी मलकी और हकी, एक अव्वल दो आखिरत ॥८॥
मेरी रूह जो बरनन करत है, करी हादियों मेहेरबानगी ।
ना तो अव्वल से आज लगे, कहूं जाहेर न बका की ॥९॥

आतम चाहे बरनन करूं, जुगल किसोर विध दोए ।
 ए दोए बरनन कैसे करूं, दोऊ एक कहावत सोए ॥१०॥
 बरनन होए इलम से, जो इलम हक का होए ।
 एक देखाऊं बातून में, जाहेर बरनवूं दोए ॥११॥
 रूह चाहे बका सख्य की, बरनन करूं जिमी इन ।
 इलम लदुन्नी खुदाई से, जो कबहूं न सुनिया किन ॥१२॥
 जिन जानो ए बरनन, करत आदमी का ।
 ए सब थें न्यारा सुभान जो, अर्स अजीम में बका ॥१३॥
 मलकूत ऊपर हवा सुन्य, तिन पर नूर अछर ।
 नूर पार नूरतजल्ला, ए जो अछरातीत सब पर ॥१४॥
 अर्स ठौर हमेसगी, हमेसा हक सूरत ।
 सिनगार सबे हमेसगी, ना चल विचल इत ॥१५॥
 जित जैसा रूह चाहत, तहाँ तैसा बनत सिनगार ।
 नित नए वाहेदत में, सोभा अखंड अपार ॥१६॥
 या वस्तर या भूखन, जो दिल रूह चहे ।
 सो उन अंगों सोभा लिए, जानों आगूं ही बन रहे ॥१७॥
 हाथ न लगे भूखन को, जो दीजे हाथ ऊपर ।
 चित्त चाह्या अंगों सब लग रह्या, जुदा होए न अग्या बिगर ॥१८॥
 जिन खिन चित्त जो चाहे, सो आगूंही बनि आवे ।
 इन विध सिनगार सब समें, नित नए रूप देखावे ॥१९॥
 ना पेहेन्या ना उतारिया, दिल चाह्या नित सुख ।
 वाहेदत हमेसा ए सुख, हक सींचल सनमुख ॥२०॥
 सब्द न लगे सोभा असलें, पर रूह मेरी सेवा चाहे ।
 तो बरनन करूं इनका, जानों रूहों भी दिल समाए ॥२१॥

इन जिमी जरे की रोसनी, मावत नहीं आसमान ।
 तो ए बरनन क्यों होवहीं, अर्स साहेब सुभान ॥२२॥
 आसिक क्यों बरनन करे, इस्क लिए रहेमान ।
 एक अंग को देखन लगी, सो तित हीं भई गलतान ॥२३॥
 सोभा जुगल किसोर की, सुख सागर चौथा ए ।
 आवें लेहेरें नेहेरें अति बड़ी, झीलें अरवाहें जो इन के ॥२४॥
 खूबी जुगल किसोर की, प्रेम वचन इन रीत ।
 आसिक इन मासूक की, भर भर प्याले पीत ॥२५॥
 मेरी रूह नैन की पुतली, तिन पुतलियों के नैन ।
 तिन नैनों में राखूं मासूक को, ज्यों मेरी रूह पावे सुख चैन ॥२६॥
 ॥मंगला चरन तमाम॥

सिर पाग बांधी चतुराई सों, हकें पेच हाथ में ले ।
 भाव दिल में लेय के, सुख क्यों कहूं विध ए ॥२७॥
 केस चुए^१ में भीगल, लिए जुगतें पेच फिराए ।
 पेच दिए ता पर बहु विध, बांधी सारंगी बनाए ॥२८॥
 उज्जल हस्त कमल सों, कोमल नरम अतंत ।
 बांधी हिरदे विचार के, दोऊ क्यों कर करूं सिफत ॥२९॥
 रंग लाल जरी माहें बेल कई, कई फूल पात नकस कटाव ।
 कई रंग नंग जवेर झलकें, बलि जाऊं बांधी जिन भाव ॥३०॥
 आसिक एही विचार हीं, तब याही में रहे लपटाए ।
 अंदर हक पेचन से, क्यों कर निकस्यो जाए ॥३१॥
 ऊपर कलंगी लटकत, झलकत है अति जोत ।
 याको नूर आसमान में, भराए रह्यो उद्योत ॥३२॥

ऊपर सारंगी दुगदुगी, करे जो झलझलाट ।
 ए देखे अंतर आंखें खुलें, ए जो हैड़े के कपाट ॥३३॥
 इन परन का नूर क्यों कहूं, देख देख रूह अटकत ।
 और न्यारी जोत नंगन की, ए जो दुगदुगी^१ लटकत ॥३४॥
 ऊपर दुगदुगी जो मानिक, आसमान भर्यो ताके तेज ।
 आसमान जिमी के बीच में, जोत पोहोंची रेजा रेज ॥३५॥
 सुन्दरता इन मुख की, सब्द न पोहोंचे कोए ।
 नूर को नूर जो नूर है, किन मुख कहूं रंग सोए ॥३६॥
 ए उज्जल रंग अंग अर्स का, माहें गेहेरी लालक ले ।
 मुख चौक छवि इनकी, किन विध कहूं मैं ए ॥३७॥
 तिलक सोभित रंग कंचन, असल बन्यो सुन्दर ।
 चारों तरफों करकरी, सोहे लाल बिंदी अंदर ॥३८॥
 लवने केस कानों पर, तिन केसों का जो नूर ।
 आसमान जिमी के बीच में, जोत भराए रही जहूर ॥३९॥
 नैनन की मैं क्यों कहूं, नूर रंग भरे तारे ।
 सेत माहें लालक लिए, सोहें टेढ़े अनियारे ॥४०॥
 रूह के नैनों से देखिए, अति मीठे लगें प्यारे ।
 कई रंग रस छवि इनमें, निमख न होंए न्यारे ॥४१॥
 नासिका की मैं क्यों कहूं, कोई इनका निमूना नाहें ।
 जिन देख्या सो जानहीं, वाके चुभ रहे हैड़े माहें ॥४२॥
 कानन मोती लटकत, उज्जल जोत प्रकास ।
 बीच लाल की लालक, जोत मावत नहीं आकास ॥४३॥
 लाल बाला अर्स धात का, करड़े बने चार चार ।
 इन मोती और लाल की, रूह देख देख होए करार ॥४४॥

गौर रंग अति गालों के, माहें गेहेरी लालक लिए ।
 दोऊ भ्रुकुटी बीच नासिका, ऊपर सुन्दर तिलक दिए ॥४५॥
 गौर हरवटी अति सुन्दर, बीच लांक ऊपर अधूर ।
 बल बल जाऊं मीठे मुख की, मिल दोऊ करें मजकूर ॥४६॥
 कटि कोमल अति पेट पांसली, पीठ गौर सोभे सरस ।
 गरदन केस पेच पाग के, छबि क्यों कहूं अंग अर्स ॥४७॥
 कोमल अंग कंठ हैड़ा, खभे मछे गौर लाल ।
 कोनी कांडे कोमल देखत, आसिक बदलत हाल ॥४८॥
 लीकें सोभित हथेलियां, रंग उज्जल कहूं के गुलाल ।
 रूह थें पलक न छूटहीं, अंग कोमल नूरजमाल ॥४९॥
 नरम अंगुरियां पतली, पोहोंचे सलूकी जुदे भाए ।
 रंग सलूकी पोहोंचे हथेलियां, किन मुख कहूं चित्त ल्याए ॥५०॥
 नैन श्रवन मुख नासिका, मुख छबि अति सुन्दर ।
 ए देखत हीं आसिक अंगों, चुभ रहत हैड़े अन्दर ॥५१॥
 बीड़ी सोभित मुख मोरत, लेत तम्बोल रंग लाल ।
 ए बरनन रूह तोलों करे, जोलों लगे न हैड़े भाल ॥५२॥
 जानों के जोवन नौतन, अजूं चढ़ता है रंग रस ।
 ऐसा कायम हमेसा, इन विध अंग अर्स ॥५३॥
 सेत जामा अंग लग रह्या, मिहीं चूड़ी बनी दोऊ बांहें ।
 दावन क्यों बरनन करूँ, इन अंग की जुबांए ॥५४॥
 बेल नकस दोऊ बगलों, चीन झलकत मोहोरी जड़ाव ।
 नकस बेल गिरबान बन्ध, पीछे अतंत बन्यो कटाव ॥५५॥
 ए देत देखाई रंग जवेर, नकस कटाव बेली जर ।
 लगत नाहीं हाथ को, रंग नंग धागा बराबर ॥५६॥

इजार^१ रंग जो केसरी, झाँई जामें में लेत ।
 दावन जड़ाव अति जगमगे, रंग सोभे केसरी पर सेत ॥५७॥
 नीले पीले के बीच में, झाँई लेत रंग दोए ।
 सो पटुका कमर बन्या, रंग कह्या सुन्दरबाई सोए ॥५८॥
 जरी पटुका कटाव कई, कई नकस बेल किनार ।
 पाच पांने हीरे पोखरे, कई रंग नंग झलकार ॥५९॥
 मनी मानिक लसनियां नीलवी, अतंत उद्योतकार ।
 फूल पात बेल नकस, ए जोत न छेड़ों सुमार ॥६०॥
 हेम वस्तर नंग नूर में, नरमाई अतंत ।
 जो कोई चीज अर्स की, खुसबोए अति बेहेकत ॥६१॥
 एक हार मोती एक नीलवी, और हार हीरों का एक ।
 एक हार लाल मानिक का, एक लसनियां विसेक ॥६२॥
 इन हारों बीच दुगदुगी, नूर नंग कह्यो न जाए ।
 जोत अम्बर लों उठ के, अवकास रह्यो भराए ॥६३॥
 इन पांचों हार के फुमक, तिन फुमक पांचों रंग ।
 रंग पांचों सोभें जुदे जुदे, जरी सोभित धागे संग ॥६४॥
 ए पांच रंग एक कंचन, ताके बने जो बाजूबन्ध ।
 इन जुबां सोभा क्यों कहूं, झूलें फुन्दन भली सनन्ध ॥६५॥
 दोए पोहोंची दोए जिनस की, मनी मानिक मोती पुखराज ।
 हेम हीरा लसनियां नीलवी, दोऊ पोहोंची रही बिराज ॥६६॥
 एक पोहोंची एक दुगदुगी, और सात सात दूजी को ।
 सो सातों जिनस जुदी जुदी, आवत ना अकल मों ॥६७॥
 पाच पांने हीरे पोखरे, मुंदरी अंगुरियों सात ।
 नीलवी मोती लसनियां, साज सोभित हेम धात ॥६८॥

एक अंगूठी आठमी, सो सोभा लेत सब पर ।
 सो ए एक मानिक की, जुड़ बैठी अंगूठे भर ॥६९॥
 इन मुख नख जोत क्यों कहूं, कई कोट सूरज ढंपाए ।
 ए सुखकारी तेज सीतल, ए सिफत न कही जाए ॥७०॥
 अजब रंग आसमानी का, जुड़ी जामें मिहीं चादर ।
 ए भूखन बेल कटाव जामें, सब आवत माहें नजर ॥७१॥
 लाल नीले पीले रंग कई, सोभें छेड़ों बीच किनार ।
 जामें चादर मिल रही, लेहेरी आवत किरनें अपार ॥७२॥
 गेहेरा रंग जो केसरी, लेत दावन झांई इजार ।
 सेत केसर दोऊ रंग के, सोभा होत सुखकार ॥७३॥
 नेफे मोहोरी चीन के, बेल बनी मोती नंग ।
 लाल नीली पीली चूनियां, सोभित कंचन संग ॥७४॥
 कई रंग इजार बंध में, अनेक विध के नंग ।
 सारी उमर बरनन करूं, तो होए ना सुपन के अंग ॥७५॥
 एक एक नंग नाम लेत हों, रंग रंग में रंग अनेक ।
 एकै इजार बंध में, क्यों कहूं रंग नंग विवेक ॥७६॥
 याकी रंग सलूकी क्यों कहूं, बका धनी के चरन ।
 लांक तली रंग सोभित, ग्रहं रूह के अन्तस्करन ॥७७॥
 देखूं रंग चरन अंगूठे, और सलूकी कहूं क्यों कर ।
 नख उतरते छोटे छोटे, सोभा लेत अंगुरियों पर ॥७८॥
 पोहोंचे सोभित रंग सुन्दर, टांकन घूटी काड़े कोमल ।
 लांक एड़ी पीड़ी पकड़, बेर बेर जाऊँ बल बल ॥७९॥
 ए चरन नख अति सोभित, जानो तेज पुंज भर पूर ।
 लेहेरें लगें आकास को, नेहेरें चलत तेज नूर ॥८०॥

अब जो भूखन चरन के, हेम झांझर घूंघर कड़ी ।
 अनेक रंग नंग झलकें, जानों के जवेर जड़ी ॥८१॥
 जड़ी न घड़ी समारी किने, ए तो कायम सदा असल ।
 नई न पुरानी अर्स में, इत होत न चल विचल ॥८२॥
 जरी जवेर रंग रेसम, नकस बेल फूल पात ।
 ए सिनगार सोभा कही इन जुबां, पर सब्द न इत समात ॥८३॥
 अब जो वस्तर भूखन की, क्यों कर होए बरनन ।
 इत अकल ना पोहोंचत, और ठौर नहीं बोलन ॥८४॥
 ए भूखन अर्स जवेर के, हक सूरत के अंग ।
 कहा कहे रूह इन जुबां, रंग रेसम सोब्रन^१ नंग ॥८५॥
 आसिक इन चरन की, अर्स मेला रूहन ।
 ए खिलवत खाना गैब का, जिन इत किया रोसन ॥८६॥
 चरन तली ना छूटत, रंग लाल लिए उज्जल ।
 ताए क्यों कहिए आसिक, जो इतथें जाए चल ॥८७॥
 पांउं तले पड़ी रहे, याको इतहीं खान पान ।
 एही दीदार दोस्ती कायम, जो होए अरवा अर्स सुभान ॥८८॥
 इतहीं जगात इत जारत, इत बंदगी परहेजी जान ।
 और आसिक न रखे या बिना, इतहीं होवे कुरबान ॥८९॥
 खाना दीदार इनका, या सों जीवे लेवे स्वांस ।
 दोस्ती इन सरूप की, तिनसे मित्त प्यास ॥९०॥
 हक खिलवत जाहेर करी, इत सिजदा हैयात ।
 इतहीं इमाम इमामत, इतहीं महंमद सिफात ॥९१॥
 कोई खाली न गया इन खिलवतें, कछू लिया हक का भेद ।
 सो कहूं जाए ना सके, पड़्या इस्क के कैद ॥९२॥

आसिक पकड़े जो दावन, तो छूटे नहीं क्यों कर ।
 देखत देखत चीन लगे, तोलों जात निकस उमर ॥९३॥
 बोहोत अटकाव है आसिक, कछू सेवा भी किया चाहे ।
 ए तो बरनन सिनगार, सेवा उमंग रही भराए ॥९४॥
 जो कदी कमर अटकी, तो आसिक न छोड़े ए ।
 ए लांक पटुका छोड़ के, जाए न सके उर ले ॥९५॥
 जो दिल हक का देखिए, तो पूरा इस्क का पुन्ज^१ ।
 क्यों छोड़े आसिक इनको, हक दिल इस्क गन्ज^२ ॥९६॥
 मोमिन दिल अर्स कह्या, सो अर्स हक का घर ।
 इस्क प्याले हक फूल के, देत भर भर अपनी नजर ॥९७॥
 इस्क सुराही लेय के, आए बैठे दिल पर ।
 इस्क प्याले आसिकों, हक देत आप भर भर ॥९८॥
 जो कदी आवे मस्ती में, तो एक प्याला देवे गिराए ।
 सराब तहूरा^३ ऐसा चढ़े, दिल तबहीं देवे फिराए ॥९९॥
 जाए हक सराब पिलावत, आस बांधत है सोए ।
 वाको अर्स सराब की, आवत है खुसबोए ॥१००॥
 आई जो कदी खुसबोए, ए जो अर्स की सराब ।
 इन मद के चढ़ाव से, देवे तबहीं उड़ाए ख्वाब ॥१०१॥
 आज लगे ढांप्या रह्या, हकें मोहोर करी तिन पर ।
 सो अछूत प्याला फूल का, हकें खोल दिया मेहेर कर ॥१०२॥
 एकों पिया एक पीवत हैं, एक प्याले पीवेंगे ।
 खोल्या दरवाजा अर्स का, वास्ते अर्स अरवाहों के ॥१०३॥
 अंग आसिक उपले देख के, इतहीं रहे ललचाए ।
 जो कदी पैठे गंज में, तो क्यों कर निकस्यो जाए ॥१०४॥

हस्त कमल को देखिए, तो अति खूबी कोमल ।
 ए छोड़ आगे जाए ना सके, जो कोई आसिक दिल ॥१०५॥
 नख अंगुरियां निरखते, मुंदरियां अति झलकत ।
 ए रंग रेखा क्यों छूटहीं, आसिक चित्त गलित ॥१०६॥
 पोहोंची बांहें बाजू बन्ध, दोऊ निरखत नीके कर ।
 एक नंग और फुन्दन, चुभ रहत हैड़े अन्दर ॥१०७॥
 हिरदे कमल अति कोमल, देख इन सख्य के अंग ।
 जो आसिक कहावे आपको, क्यों छोड़े इनको संग ॥१०८॥
 हार कण्ठ गिरवान^१ जो, अति सुन्दर सुखदाए ।
 लाल लटकत मोती पर, ए सोभा छोड़ी न जाए ॥१०९॥
 मुख सख्य अति सुन्दर, क्यों कहूं सोभा मुख इन ।
 एक अंग जो निरखिए, तो तितहीं थके बरनन ॥११०॥
 छबि सख्य मुख छोड़ के, देख सकों न लांक अधूर ।
 ए लाल की लालक क्यों कहूं, जो अमृत अर्स मधूर ॥१११॥
 ए मुख अधूर लांक^२ छोड़ के, क्यों कर दन्त लग जाए ।
 देत नाम निमूना इत का, सों इन सख्यें क्यों सोभाए ॥११२॥
 सो दन्त अधूर लांक छोड़ के, जाए न सकों लग गाल ।
 सो गाल लाल मुख छोड़ के, आगूं नजर न सके चाल ॥११३॥
 मुख नासिका देखत आसिक, सुन्दर सोभा अतंत ।
 नेत्र बीच निलाट तिलक, आसिक याही सों जीवत ॥११४॥
 भृकुटी तिलक सोभा छोड़ के, जाए न सकों लग कान ।
 सो कान कोमल अति सुन्दर, सुख पाइए हिरदे आन ॥११५॥
 और भी खूबी कानन की, दिल दरदां देवे भान ।
 जाको केहे लेऊं पड़ उत्तर, कोई न सुख इन समान ॥११६॥

कहें सुनें बातें करें, ए जो अर्स मेहेरबान ।
 सो खिलवत सुख छोड़ के, लग जवाए नहीं नैन बान ॥११७॥
 ए नैन बान सुभान के, क्यों छोड़ें रूह मोमिन ।
 ए नैन रस छोड़ आगे चले, रूहें नाम धरत हैं तिन ॥११८॥
 नैन अनियारे अति तीखे, पल देत तारे चंचल ।
 स्याम उज्जल लालक लिए, ए क्यों कहूं सुपन अकल ॥११९॥
 नैन रसीले रंग भरे, खँचत बंके^१ मरोर ।
 सो आसिक रूह जाए ना सके, जाए लगें बान ए जोर ॥१२०॥
 ए नेत्र रसीले निरखते, उपजत है सुख चैन ।
 ए क्यों न्यारे होए नैन रूह के, सामी छोड़ नैन की सैन ॥१२१॥
 जो चल जाए सारी उमर, तो क्यों छोड़िए सुख नैनन ।
 इन सुख से क्यों अघाइए, आसिक अंतस्करन ॥१२२॥
 निलवट^२ सुन्दर सुभान के, सोभा मीठी मुखारबिंद ।
 ए छबि कहीं न जाए एक अंग की, ए तो सोभा सागर खावंद ॥१२३॥
 हँसत सोभित हरवटी^३, दंत अधुर मुख लाल ।
 आसिक से क्यों छूटहीं, सब अंग रंग रसाल ॥१२४॥
 अति कोमल अंग किसोर, कायम अंग उनमद^४ ।
 ए छबि अंग अर्स के, पोहोंचत नहीं सब्द ॥१२५॥
 मुख नासिका नेत्र भौंह, तिलक निलाट और कान ।
 हाथ पांउ अंग हैड़ा, सब मुसकत^५ केहेत मुख बान ॥१२६॥
 जो आसिक इन मासूक की, सो अटक रहे एकै अंग ।
 और अंग लग जाए ना सके, अंग एकै लग जाए रंग ॥१२७॥
 देख बीड़ी मुख मोरत, रूह अंग उपजत सुख ।
 पीऊं सराब लेऊं मस्ती, ज्यों बल बल जाऊं इन मुख ॥१२८॥

ए छबि छोड़ के आसिक, क्यों कर आगे जाए ।
 मोहि लेत मुख मासूक, सो चित्त रह्यो चुभाए ॥१२९॥
 नैनों निलवट निरखते, देखी बनी सारंगी पाग ।
 दुगदुगी कलंगी ए जोत, छबि रूह हिरदे रही लाग ॥१३०॥
 होए बरनन चतुराई से, आसिक धरे ताको नाम ।
 एक अंग छोड़ जाए और लगे, सो नहीं आसिक को काम ॥१३१॥
 आसिक कहिए हक की, जो लग रहे एकै ठौर ।
 आसिक ऐसी चाहिए, जो ले न सके अंग और ॥१३२॥
 इन आसिक की नजरों, दिल एकै हुआ सागर ।
 सो झीले याही सुख में, निकसे नहीं क्योंए कर ॥१३३॥
 तो सोभा सारे सरूप की, क्यों कहे जुबां इन ।
 लेहेरें नेहेरें पोहोचें आकास लों, और ठौर न कोई मोमिन ॥१३४॥
 आसिक न लेवे दानाई^१, पर ए दानाई हक ।
 इस्क आपे पीवहीं, और पिलावें बेसक ॥१३५॥
 ए चतुराई हक की, और हकै का इलम ।
 ए सुख इन सरूप के, देवें एही खसम ॥१३६॥
 इन सरूप को बरनन, सो याही की चतुराए ।
 याको आसिक जानिए, जो इतहीं रहे लपटाए ॥१३७॥
 ए सुख इन सरूप को, और आसिक एही आराम ।
 जोलों इस्क न आवहीं, तोलों इलम एही विश्राम ॥१३८॥
 इस्क को सुख और है, और सुख इलम ।
 पर न्यारी बात आसिक की, जिन जो देवें खसम ॥१३९॥
 ए इलम ए इस्क, दोऊ इन हक को चाहें ।
 पर जिनको हक जो देत हैं, सो लेवे सिर चढ़ाए ॥१४०॥

महामत कहे अपनी रूहन को, तुम जो अरवा अर्स ।
सराब प्याले इस्क के, ल्यो प्याले पर प्याले सरस ॥१४९॥

॥प्रकरण॥५॥चौपाई॥३४९॥

श्री ठकुरानी जी को सिनगार पेहेलो

मंगला चरन

बरनन करूं बड़ी रूह की, रूहें इन अंग का नूर ।
अरवाहें अर्स में वाहेदत, सो सब इन का जहूर ॥१॥
प्रथम लागूं दोऊ चरन को, धनी ए न छोड़ाइयो खिन ।
लांक तली लाल एड़ियां, मेरे जीव के एही जीवन ॥२॥
सिफत नख कहूं के अंगुरियों, के रंग पोहोंचे ऊपर टांकन ।
कहूं कोमलता किन जुबां, मेरे जीव के एही जीवन ॥३॥
रंग नरमाई सलूकी^१, अर्स अंग चरन ।
बल बल जाऊं देख देख के, मेरे जीव के एही जीवन ॥४॥
इन पांउं तले पड़ी रहूं, धनी नजर खोलो बातन ।
पल न वालूं^२ निरखूं नेत्रे, मेरे जीव के एही जीवन ॥५॥
चारों जोड़े चरन के, और अनवट^३ बिछिया^४ रोसन ।
बानी मीठी नरमाई जोत धरे, मेरे जीव के एही जीवन ॥६॥
प्यारे मेरे प्राण के, मोहे पल छोड़ो जिन ।
मैं पाई मेहेर मेहेबूब की, मेरे जीव के एही जीवन ॥७॥
ए चरन पुतलियां नैन की, सो मैं राखूं बीच तारन ।
पकड़ राखूं पल ढांप के, मेरे जीव के एही जीवन ॥८॥
मेरे मीठे मीठरड़े आत्म के, सो चुभ रहे अन्तस्करन ।
रूह लागी मीठी नजरों, मेरे जीव के एही जीवन ॥९॥

ए चरन कमल अर्स के, इनसे खुसबोए आवे वतन ।
 ए तन बका अर्स अजीम, मेरे जीव के एही जीवन ॥१०॥
 ए चरन निमख न छोड़िए, राखिए माहें नैनन ।
 ए निसबत हक अर्स की, मेरे जीव के एही जीवन ॥११॥
 मेहेरें नेहेर ल्याए चरन अन्दर, द्वार नूर पार खोले इन ।
 मोहे पोहोंचाई बका मिने, मेरे जीव के एही जीवन ॥१२॥
 सोभा सिनगार अंग सुखकारी, मेरी रूह के कण्ठ भूखन ।
 सब खूबियां मेरे इन सें, मेरे जीव के एही जीवन ॥१३॥
 ए मेहेर अलेखे असल, मेरे ताले अर्स के तन ।
 क्यों न होए मोहे बुजरकियां, मेरे जीव के एही जीवन ॥१४॥
 चित्त खेंच लिया इन चरनों, मोहे सब विध करी धन धन ।
 ए सिफत करूं क्यों इन जुबां, मेरे जीव के एही जीवन ॥१५॥
 ज्यों जानो त्यों मेहेबूब करो, ए सुख दिया न जाए दूजे किन ।
 कहूं तो जो दूजा कोई होवहीं, मेरे जीव के एही जीवन ॥१६॥
 क्यों कहूं चरन की बुजरकियां, इत नहीं ठौर बोलन ।
 ए पकड़ सरूप पूरा देत हैं, मेरे जीव के एही जीवन ॥१७॥
 करत चरन पूरी मेहेर, तिन सरूप आवत पूरन ।
 प्यार पूरा ताए आवत, मेरे जीव के एही जीवन ॥१८॥
 ए चरन दिल आवें निसबतें, ए मता अर्स रूहन ।
 ए धनी के दिए क्यों छूटहीं, मेरे जीव के एही जीवन ॥१९॥
 धनी देवें सहूर सब विध, तो नैनों निरखूं निसदिन ।
 आठों जाम चौंसठ घड़ी, मेरे जीव के एही जीवन ॥२०॥
 महामत चाहें इन चरन को, कर मनसा वाचा करमन ।
 आए बैठे मेरे सब अंगो, मेरे जीव के एही जीवन ॥२१॥

॥मंगला चरन संपूर्ण॥

ए रूह सरूप नहीं तत्व को, इनको अस्वारी मन ।
 खान पान सुख सिनगार, ए होए रूह के चितवन ॥२२॥
 जो पेहेनावा अर्स का, अचरज अदभुत जान ।
 कहूं दुनियाँ में किन विध, किन कबहूँ न सुनिया कान ॥२३॥
 कण्ठ कान मुख नासिका, ए जो पेहेनत हैं भूखन ।
 ए दुनियां ज्यों पेहेनत है, जिन जानो विध इन ॥२४॥
 या वस्तर या भूखन, सकल अंग हाथ पाए ।
 सो असल ऐसे ही देखत, जैसा रूह चित्त चाहे ॥२५॥
 अंग संग भूखन सदा, दिलके तअल्लुक^१ असल ।
 ए सरूप सिनगार दिल चाहे, अर्स में नहीं नकल ॥२६॥
 ज्यों अंग त्यों वस्तर भूखन, होत हमेसा बने ।
 दिल जैसा चाहे खिन में, तैसा आगूंहीं पेहेने ॥२७॥
 जाको नामै कायम, अखंड बका अपार ।
 सोई भूल जानो अपनी, सोभा ल्याइए माहें सुमार ॥२८॥
 पेहेले सोभा कही सुभान की, सोई सोभा बड़ी रूह जान ।
 नहीं जुदागी इनमें, जुगल किसोर परवान ॥२९॥
 हक सूरत को नूर हैं, जिन जानो अंग और ।
 इनको नूर रूहें वाहेदत, कोई और न पाइए इन ठौर ॥३०॥
 सोभा स्यामाजीय की, निपट अति सुन्दर ।
 अन्तर पट खोल देखिए, दोऊ आवत एक नजर ॥३१॥
 लाल साड़ी कटाव कई, कई छापे बेली नकस ।
 क्यों कहूं छेड़े किनार की, सोभित अति सरस ॥३२॥

माहें जरी जवेर रंग कई, जानों आगूंहीं बने असल ।
 जित जुगत जो चाहिए, सोभित अपनी मिसल ॥३३॥
 बेली किनार छेड़े बनी, सुन्दर अति सोभित ।
 कटाव फूल नकस कई, जुदी जुदी जड़ाव जुगत ॥३४॥
 ऐसे ही असल के, ना कछू बुने वस्तर ।
 ऐसे ही भूखन बने, किन घड़े न घाट घड़तर ॥३५॥
 चोली स्याम जड़ाव नंग, माहें हेम जवेर अनेक ।
 जड़तर कंठ उर बाहें, कहां लग कहूं विवेक ॥३६॥
 जित बेली बनी चाहिए, और कांगरी फूल ।
 कई नकस खजूरे बूटियां, चोली सोभित है इन सूल^१ ॥३७॥
 नंग हेम मिले तो कहूं, जो किन जड़े होए जड़तर ।
 नकस कटाव बेली तो कहूं, जो किन बनाए होए हाथों कर ॥३८॥
 चरनी नीली अतलस^२, माहें अनेक बिध के रंग ।
 चीन पर बेली नकस, बीच जरी बेल फूल नंग ॥३९॥
 क्यों कहूं किनार की कांगरी, मानिक मोती सात नंग ।
 हीरे लसलिए पांने पोखरे, माहें पाच कुन्दन करें जंग ॥४०॥
 वस्तर धागा न सूझहीं, सरभर जरी नकस ।
 वस्तर भर्यो न बुन्यो किने, असल सबे एक रस ॥४१॥
 नवरंग इन नाड़ी मिने, कंचन धात उज्जल ।
 ए केहेती हों सब अर्स के, ए देखो दिल निरमल ॥४२॥
 क्या वस्तर क्या भूखन, चीज सबे सुखकार ।
 खुसबोए रोसन नरमाई, इन बिध अर्स सिनगार ॥४३॥
 सिर पर सोहे राखड़ी^३, जोत साड़ी में करे अपार ।
 फिरते मोती माहें मानिक, पांने पोखरे दोऊ किनार ॥४४॥

ऊपर राखड़ी जो मानिक, क्यों देऊं इनकी मिसाल ।
 आसमान जिमी के बीच में, होए गयो सब लाल ॥४५॥
 कुन्दन माहें धरे अति जोत, आकास न माए झलकार ।
 बेन^१ गूंथी तीन गोफने, जड़ित घूंघरी घमकार ॥४६॥
 तीन रंग जरी फुन्दन, गोफनड़े नंग जड़तर ।
 बारीक नंग नीले नकस, ए बरनन होए क्यों कर ॥४७॥
 पांन सोहे सेंथे पर, माहें बेल कांगरी कटाव ।
 हारें खजूरें बूटियां, मानों के जुगत जड़ाव ॥४८॥
 सिर पटली मोती सरें, माहें पांच नंग के रंग ।
 मोती सर सेंथे लग, नीले पीले लाल सेत नंग ॥४९॥
 तिन नंगों के फूल बने, आगूं सिर पटली कांगरी ।
 निलवट से ले राखड़ी, बीच लाल मांग भरी ॥५०॥
 अदभुत सोभा ए बनी, कहूं जो होवे और काहें ।
 ए देखे ही बनत है, केहेनी में आवत नाहें ॥५१॥
 बेनी गूंथी एक भांत सों, पीठ गौर ऊपर लेहेकत ।
 देत देखाई साड़ी मिने, फिरती घूंघरड़ी घमकत ॥५२॥
 चोली के बंध चारों बंधे, सोभित पीठ ऊपर ।
 झलकत फुन्दन चोली कांगरी, सोभा देखत साड़ी अंदर ॥५३॥
 ए छबि पीठ की क्यों कहूं, रंग गौर लांक सलूक ।
 ए सोभा केहेत सखत जीवरा, हुआ नहीं टूक टूक ॥५४॥
 मुख चौक छबि निलवट बनी, क्यों कर कहूं सिफत ।
 ए सोभा अर्स सरूप की, क्यों होए इन जुबां इत ॥५५॥
 पाच हीरे मोती मानिक, बेना^२ चौक टीका सोभित ।
 सेंथें लाल तले मोती सरें, नूर रोसन तेज अतंत ॥५६॥

जड़ित पानड़ी^१ श्रवनों, लरें लाल मोती लटकत ।
 ए जरी जोत कही न जावहीं, पांच नंग झलकत ॥५७॥
 काजल रेखा तो कहूं, जो होए सुपन के नैन ।
 ए स्याम सेत लाल असल, सदा सुखकारी सुख चैन ॥५८॥
 ए तन नैन अर्स के, नहीं और कोई देह ।
 ए निरखो नैनों रूह के, भीगल प्रेम सनेह ॥५९॥
 नैन तीखे अति अनियारे, सखी ए छबि कही न जाए ।
 आधे घूंघट मासूक को, निरखत नैन तिरछाए ॥६०॥
 सब अंग उमंग करत हैं, करने बात रहेमान ।
 दिल मासूक का देख के, खैंचत हैं प्रेम बान ॥६१॥
 कहा कहूं नूर तारन का, सेत लालक लिए ।
 काजल रेखा अनियों पर, अंग असल ही दिए ॥६२॥
 तिन तारन में जो पुतलियां, माहें नूर रंग रस ।
 पिउ देखें प्यारी नैनों, साम सामी अरस-परस ॥६३॥
 चकलाई चंचलाई की, छबि होए नहीं बरनन ।
 जो धनी देवें पट खोल के, तो तबहीं उड़े एह तन ॥६४॥
 बंके भौं भृकुटी लिए, सोभित गौर अंग ।
 अंग अंग भूखन भूखन, करत माहों माहें जंग ॥६५॥
 दोऊ जड़ाव अदभुत, सात रंग नंग झाल^२ ।
 सुच्छम झाल सोभा अति बड़ी, झांई उठत माहें गाल ॥६६॥
 फूल झालों के मुख पर, सोभा लेत अति नंग ।
 तिन नंगों जोत उठत है, तिनके अनेक तरंग ॥६७॥
 ऊपर किनार साड़ी सोभित, लाल नीली पीली जर ।
 छब फब बनी कोई भांत की, सेंथे^३ लवने^४ झाल ऊपर ॥६८॥

ए जो कांगरी इन नंग की, सोभित माहें किनार ।
 गौर निलवट स्याम केसों पर, जाए अंबर लगी झलकार ॥६९॥
 सोभा कहूं अंग माफक, इन सुपन जुबां अकल ।
 सो क्यों पोहोंचे इन सरूप लों, जो बीच कायम बका असल ॥७०॥
 गौर रंग अति गालों के, ए रंग जानें इनके तन ।
 अचरज अदभुत वाही देखें, जो हैं अर्स मोमिन ॥७१॥
 मुख चौक नेत्र नासिका, निहायत सोभा अतंत ।
 मुरली^१ नासिका तेज में, सोभे नंग मोती लटकत ॥७२॥
 एक खसखस के दाने जेता, नंग रोसन अंबर भराए ।
 क्यों कहूं नंग मुरलीय के, ए जुबां इत क्यों पोहोंचाए ॥७३॥
 हक के अंग का नूर है, ए जो अर्स बका खावंद ।
 ए छवि इन सरूप की, क्यों केहेसी मत मंद ॥७४॥
 दंत लालक लिए मुख अधुर, क्यों कहूं रंग ए लाल ।
 जो कछू होवे पेहेचान, तो क्यों दीजे इन मिसाल ॥७५॥
 सुन्दर सरूप स्यामाजीय को, अर्स अखंड सिनगार ।
 रूह मुख निरख्यो चाहत, उर पर लटकत हार ॥७६॥
 एक हार मोती निरमल, और मानिक जोत धरत ।
 तीसरा हार लसनियां, सो सोभा लेत अतंत ॥७७॥
 चौथा हार हीरन का, पांचमा सुन्दर नीलवी ।
 इन हारों बीच दुगदुगी^२, देखत सोभा अति भली ॥७८॥
 क्यों कहूं नंग दुगदुगी, ए पांचों सैन्या चढ़ाए ।
 जंग करें माहें जुदे जुदे, पांचों अंबर में न समाए ॥७९॥
 पांचों ऊपर हार हैंम का, मुख मोती सिरे नीलवी ।
 ए हार अति बिराजत, जड़तर चंपकली ॥८०॥

पाच पांने पुखराज, जरी मांहे जड़ित ।
 चंपकली का हार जो, उर ऊपर लटकत ॥८१॥
 ऊपर चोली के कांठले, बेल लगत कांगरी ।
 ऊपर चंपकलीय के, मोती मानिक पाने जरी ॥८२॥
 पांच लरी चीड़ तिन पर, कंठ लग आई सोए ।
 रंग नंग धात अर्स के, इन जुबां सिफत क्यों होए ॥८३॥
 सात हार के फुमक, जगमगे सातों रंग ।
 मूल बंध बेनी तले, बन रहे ऊपर अंग ॥८४॥
 बाजू बंध दोऊ बने, जरी फुमक लटकत ।
 हीरे लसनिएं नीलवी, देख देख रूह अटकत ॥८५॥
 नवरंग रतन नंग चूड़ के, अर्स धात न सोभा सुमार ।
 चूड़ जोत जो करत है, आकास न माए झलकार ॥८६॥
 नवरंग रतन चूड़ के, जुदी जुदी चूड़ी झलकत ।
 जोत सों जोत लरत है, सोभा अर्स कहूं क्यों इत ॥८७॥
 अतंत जोत इन धात में, इन नंग में जोत अतंत ।
 अतंत जोत रंग रेसम, तीनों नरमाई एक सिफत ॥८८॥
 कंचन जड़ित जो कन्कनी, माहे बाजत इनइनकार ।
 बेल फूल नकस जड़े, झलकत चूड़ किनार ॥८९॥
 निरमल पोहोंची नवधरी, पांच पांच दोऊ के नंग ।
 अर्स रसायन में जड़े, करत मिनो मिने जंग ॥९०॥
 हथेली लीकें क्यों कहूं, नरम हाथ उज्जल ।
 रंग पोहोंचे का क्यों कहूं, इत जुबां न सके चल ॥९१॥
 पांच अंगुरियां पतली, जुदी जुदी पांचों जिनस ।
 अर्स अंग की क्यों कहूं, उज्जल लाल रंग रस ॥९२॥

आठ रंग के नंग की, पेहेरी जो मुंदरी ।
 एक कंचन एक आरसी, सोभित दसों अंगुरी ॥९३॥
 मानिक मोती लसनिएं, पाच पांने पुखराज ।
 गोमादिक और नीलवी, आठों अंगुरी रही बिराज ॥९४॥
 अंगूठे हीरे की आरसी, दसमी जड़ित अति सार ।
 ए जो दरपन माहें देखत, अंबर न माए झलकार ॥९५॥
 नख निमूना देऊं हीरों का, सो मैं दिया न जाए ।
 एक नख जरे की जोत तले, कई सूरज कोट ढंपाए ॥९६॥
 अब कहूं चरन कमल की, जो अर्स रूहों के जीवन ।
 बसत हमेसा चरन तले, जो अरवाह अर्स के तन ॥९७॥
 चरन तली अति कोमल, रंग लाल लांके दोए ।
 मिहीं रेखा माहें कई विध, ए बरनन कैसे होए ॥९८॥
 ए जो सलूकी चरन की, निपट सोभा सुन्दर ।
 जो कोई अरवा अर्स की, चुभ रहेत हैड़े अन्दर ॥९९॥
 कोई नाहीं इनका निमूना, पोहोंचे अति सोभित ।
 टांकन घूटी काड़े एड़ियां, पांउं तली अति झलकत ॥१००॥
 ए छब फब सब देख के, इन चरन तले बसत ।
 ए सुख अर्स रूहें जानहीं, जिनकी ए निसबत ॥१०१॥
 चारों जोड़े चरन के, झांझर घूंघर कड़ी ।
 कांबिए नंग अर्स के, जानों के चारों जोड़े जड़ी ॥१०२॥
 नंग नीले पीले झांझरी, और मोती मानिक पांने जरी ।
 निरमल नाके कंचन, रंग लाल लिए घूंघरी ॥१०३॥
 गांठे वाले रसायन सों, अर्स के पांचों नंग ।
 घूंघरी नाकों बीच पीपर^१, फुमक करत जवेरों जंग ॥१०४॥

हीरे लसनिएं हेम में, कड़ी जोत झलकत ।
 नीलवी कुन्दन कांबिए, जानों जोत एही अतंत ॥१०५॥
 बोलत बानी माधुरी, चलत होत रनकार ।
 खुसबोए तेज नरमाई, जोत को नाहीं पार ॥१०६॥
 अंगुरिएं अनवट बिछिया, पांने मानिक मोती सार ।
 स्वर मीठे बाजत चलते, करत हैं ठमकार ॥१०७॥
 नख अंगूठे अंगुरियां, अंबर न माए झलकार ।
 ढांपत कोटक सूरज, और सीतलता सुखकार ॥१०८॥
 एक नख के तेज सों, ढांपत कई कोट सूर ।
 जो कहूं कोटान कोटक, तो न आवे एक नख के नूर ॥१०९॥
 कोई भांत तरह जो अर्स की, पेट पांसे उर अंग सब ।
 हाथ पांउं कंठ मुख की, किन बिध कहूं ए छब ॥११०॥
 कोनी कलाई अंगुरी, पेट पांसे उर खभे ।
 हाथ पांउं पीठ मुख छब, हक नूर के अंग सबे ॥१११॥
 मैं शोभा बरनों इन जुबां, ले मसाला इत का ।
 सो क्यों पोहोंचे इन साईं को, जो बीच अर्स बका ॥११२॥
 बीड़ी सोभित मुख में, मोरत लाल तंबोल ।
 सोभा इन सूरत की, नहीं पटंतर तौल ॥११३॥
 सुच्छम वय^१ उनमद^२ अंगे, सोभा लेत किसोर ।
 बका वय कबूं न बदले, प्रेम सनेह भर जोर ॥११४॥
 नाम लेत इन सरूप को, सुपन देह उड़ जाए ।
 जोलों रूह ना इस्क, तोलों केहेत बनाए ॥११५॥
 कोटान कोट बेर इन मुख पर, निरख निरख बलि जाऊं ।
 ए सुख कहूं मैं तिन आगे, अपनी रूह अर्स की पाऊं ॥११६॥

मुख छवि अति बिराजत, सोभित सब सिनगार ।
 देख अंगूठे आरसी, भूखन करत झलकार ॥११७॥
 भौं भृकुटी नैन मुख नासिका, हरवटी अधुर गाल कान ।
 हाथ पाँउं उर कण्ठ हँसैं, सब नाचत मिलन सुभान ॥११८॥
 तेज जोत प्रकास में, सोभा सुंदरता अनेक ।
 कहा कहूं मुखारबिंद की, नेक नेक से नेक ॥११९॥
 श्रवन कण्ठ हाथ पाँउं के, भूखन सोभित अपार ।
 एक भूखन नकस कई रंग, रूह कहा करे दिल विचार ॥१२०॥
 नेक सिनगार कह्या इन जुबां, क्यों बरनवाए सुख ए ।
 ए सोभा ना आवे सब्द में, नेक कह्या वास्ते रूहों के ॥१२१॥
 मीठी जुबां स्वर बान मुख, बोलत लिए अति प्रेम ।
 पिउ सौं बातें मुख हंसैं, लिए करें मरजादा नेम ॥१२२॥
 सामी सैन देत सुख चैन की, उतपन अंग अतंत ।
 कोमल हिरदे अति विचार, क्यों कहूं नरमाई सिफत ॥१२३॥
 चातुरी गति की क्यों कहूं, सब बोले चाले सुध होत ।
 अव्वल इस्क सब खूबियां, हक के अंग की जोत ॥१२४॥
 मुख मीठी अति रसना, चुभ रहेत रूह के माहें ।
 सो जानें रूहें अर्स की, न आवे केहेनी में क्याहें ॥१२५॥
 क्यों कहूं गति चलन की, जो स्यामाजी पाँउं भरत ।
 नाहीं निमूना इनका, जो गति स्यामाजी चलत ॥१२६॥
 बलि बलि जाऊं चाल गति की, भूखन तेज करे झलकार ।
 गिरदवाए मिलावा रूहन का, सब सोभा साज सिनगार ॥१२७॥
 सोभा बड़ी सब रूहों की, सब के वस्तर भूखन ।
 जोत न माए आकास में, यों घेर चली रौसन ॥१२८॥

अर्स मिलावा ले चली, अपने संग सुभान ।
 किया चाह्या सब दिल का, आगूं आए लिए मेहेरबान ॥१२९॥
 ए सोभा जुगल किसोर की, चौथा सागर सुख ।
 जो हक तोहे हिंमत देवहीं, तो पी प्याले हो सनमुख ॥१३०॥
 जुगल के सुख केते कहूं, जो देत खिलवत कर हेत ।
 सो सुख इन नेहेरन सों, धनी फेर फेर तोको देत ॥१३१॥
 ए बानी सब सुपन में, और सुपने में करी सिफत ।
 सो क्यों पोहोंचे सोभा जुगल को, सुपन कौन निसबत ॥१३२॥
 सब्द न पोहोंचे सुभान को, तो क्यों रहों चुप कर ।
 दिल कान जुबां ले चलत, हक तरफ बाँएँ नजर ॥१३३॥
 एते दिन ढांपे रहे, किन कही ना हकीकत ।
 जो अजूं न बोलत दुनी में, तो जाहेर होए ना हक सूरत ॥१३४॥
 ए द्वार दुनी में क्यों खोलिए, ए जो गैब हक खिलवत ।
 सो द्वार खोले मैं हुकमें, अर्स बका हक मारफत ॥१३५॥
 दुनियां से ढांपे रहे, अर्स बका एते दिन ।
 रहेत अब भी ढांपिया, जो करे ना रूह रोसन ॥१३६॥
 ए खोले बड़ा सुख होत है, मेरी रूह और रूहन ।
 इनसे हैयाती^१ पावहीं, चौदे तबक त्रैगुन ॥१३७॥
 कयामत सरत पोहोंचे बिना, तो ढांपे रहे एते दिन ।
 हकें आखिर अपने कौल^२ पर, किए जाहेर आगूं रूहन ॥१३८॥
 ए जो कहे मैं सरूप, जुगल किसोर अनूप ।
 दर्ई साहेदी महंमद रूहअल्ला, किए जाहेर अर्स सरूप ॥१३९॥
 एही लैलत-कदर की फजर^३, ऊग्या बका दिन रोसन ।
 हक खिलवत जाहेर करी, अर्स पोहोंचे हादी मोमिन ॥१४०॥

महामत कहे अपनी रूह को, और अर्स रूहन ।
इन सुख सागर में झीलते, आओ अपने वतन ॥१४१॥

॥प्रकरण॥६॥चौपाई॥४९०॥

चौसठ थंभ चौक खिलवत का बेवरा

इन विध साथी जागिए, बताए देऊं रे जीवन ।
स्याम स्यामाजी साथी, जित बैठे चौक वतन ॥१॥
याद करो सोई साइत, जो हंसने मांग्या खेल ।
सो खेल खुसाली लेय के, उठो कीजे केलि ॥२॥
सुरत एकै राखिए, मूल मिलावे माहें ।
स्याम स्यामाजी साथी, तले भोम बैठे हैं जाहें ॥३॥
चौसठ थंभ चबूतरा, इत कठेड़ा बिराजत ।
तले गिलम ऊपर चन्द्रवा, चौसठ थंभों भर इत ॥४॥
कठेड़ा किनार पर, चबूतरे गिरदवाए ।
सोले थंभों लगता, ए जुगत अति सोभाए ॥५॥
चार द्वार चारों तरफों, और कठेड़ा सब पर ।
चौसठ थंभों के बीच में, गिलम बिछाई भर कर ॥६॥
कहूं चौसठ थंभों का बेवरा, चार धात बारे नंग ।
बने चारों तरफों जुदे जुदे, भए सोले जिनसों रंग ॥७॥
चारों तरफ एक एक रंग के, तैसी तरफों चार ।
नए नए रंग एक दूजे संग, चारों तरफों चौसठ सुमार ॥८॥
ए चार नाम कहे धात के, हेम कंचन चांदी नूर ।
ए चार रंग का बेवरा, लिए खड़े जहूर ॥९॥
और बारे जवेरों का बेवरा, पाच पांने हीरे पुखराज ।
मानिक मोती गोमादिक, रहे पिरोजे बिराज ॥१०॥

नीलवी और लसनियां, और परवाली लाल ।
 और रंग कपूरिया, ए रंग बारे इन मिसाल ॥११॥
 चार द्वार चार रंग के, आठ थंभ भए जो इन ।
 पाच मानिक और नीलवी, द्वार पुखराज चौथा रोसन ॥१२॥
 और थंभ दोए पाच के, दोऊ तरफों नीलवी संग ।
 द्वार नीलवी संग दोए पाच के, करें साम सामी जंग ॥१३॥
 दो थंभ द्वार मानिक के, दोए पुखराज तिन पास ।
 दोए थंभ द्वार पुखराज के, ता संग मानिक करे प्रकास ॥१४॥
 थंभ बारे भए इन बिध, साम सामी एक एक ।
 यों बारे बने साम सामी, तरफ चारों इन विवेक ॥१५॥
 हीरा लसनियां गोमादिक, मोती पाने परवाल ।
 हेम चांदी थंभ नूर के, थंभ कंचन अति लाल ॥१६॥
 पिरोजा और कपूरिया, याके आठ थंभ रंग दोए ।
 गिन छोड़े दोए द्वार से, बने हर रंग चार चार सोए ॥१७॥
 ए सोले थंभों का बेवरा, थंभ चार चार एक रंग के ।
 सो चारों तरफों साम सामी, बने मिसल चौसठ ए ॥१८॥
 चारों तरफों चंद्रवा, चौसठ थंभों के बीच ।
 जोत करे सब जवेरों, जेता तले दुलीच ॥१९॥
 माहें बिरिख बेली कई कटाव, कई फूल पात नकस ।
 देख जवेर जुगत कई चंद्रवा, जानों के अति सरस ॥२०॥
 इन चौक बिछाई गिलम, ता पर सिंघासन ।
 चारों तरफों झलकत, जोत लेहेरी उठत किरन ॥२१॥
 झलकत सुन्दर गिलम, अति सोभित सिंघासन ।
 यों जोत जमी जवेरन की, बीच जुगल जोत रोसन ॥२२॥

लाल तकिए ऊपर सोभित, धरे बराबर एक दोर ।
नरमों में अति नरम हैं, पसम भरे अति जोर ॥२३॥
जेता एक कठेड़ा, सब में सुन्दर तकिए ।
तिन तकियों साथ भराए के, बैठे एक दिली ले ॥२४॥
जिन बिध बैठियां बीच में, याही बिध गिरदवाए ।
तरफ चारों लग कठेड़े, बीच बैठा साथ भराए ॥२५॥
किरना उठें नई नई, सिंघासन की जोत ।
कई तरंग इन जोत के, नूर नंगों से होत ॥२६॥
पाइए इन तखत के, उत्तम रंग कंचन ।
छे डांडे छे पाइयों पर, अति सुन्दर सिंघासन ॥२७॥
दस रंग डांडों देखत, नए नए सोभित जे ।
हर तरफों रंग जुदे जुदे, दसो दिस देखत ए ॥२८॥
एक तरफ देखत एक रंग, तरफ दूजी दूजा रंग ।
यों दसो दिस रंग देखत, तिन रंग रंग कई तरंग ॥२९॥
तीन डांडे जो पीछले, दो तकिए बीच तिन ।
कई रंग बिरिख बेली बूटियां, ए कैसे होए बरनन ॥३०॥
चारों किनारे चढ़ती, दोरी बेली चढ़ती चार ।
चारों तरफों फूल चढ़ते, करत अति झलकार ॥३१॥
तिन डांडों पर छत्रियां, अति सोभित हैं दोए ।
माहें कई दोरी बेली कांगरी, क्यों कहूं सोभा सोए ॥३२॥
दोए कलस दोए छत्रियों, छे कलस ऊपर डांडन ।
आठों के अवकास में, करत जंग रोसन ॥३३॥
नकस फूल कटाव कई, कई तेज जोत जुगत ।
देख देख के देखिए, नैनां क्योंए न होए तृपित ॥३४॥

चाकले दोऊ पसमी, जोत जवेर नरम अपार ।
 बैठे सुन्दर सख्य दोऊ, देख देख जाऊं बलिहार ॥३५॥
 जरे जिमी की रोसनीं, भराए रही आसमान ।
 क्यों कहूं जोत तखत की, जित बैठे बका सुभान ॥३६॥
 बरनन करूं मैं इन जुबां, रंग नंग इतके नाम ।
 ए सब्द तित पोहोंचे नहीं, पर कहे बिना भाजे न हाम ॥३७॥
 ए जवेर कई भांत के, सोभित भांत रूप कई ।
 सो पल पल रूप प्रकासहीं, यों सकल जोत एक मई ॥३८॥
 गिलम जोत फूल बेलियां, जोत ऊपर की आवे उतर ।
 जोतें जोत सब मिल रहीं, ए रंग जुदे कहूं क्यों कर ॥३९॥
 ए मूल मिलावा अपना, नजर दीजे इत ।
 पलक न पीछी फेरिए, ज्यों इस्क अंग उपजत ॥४०॥
 जो मूल सख्य हैं अपने, जाको कहिए परआतम ।
 सो परआतम लेय के, विलसिए संग खसम ॥४१॥
 महामत कहे ए मोमिनों, करूं मूल सख्य बरनन ।
 मेहेर करी मासूक ने, लीजो रूह के अन्तस्करन ॥४२॥

॥प्रकरण॥७॥चौपाई॥५३२॥

श्री राजजी को सिनगार दूसरो-मंगला चरण

अर्स तुमारा मेरा दिल है, तुम आए करो आराम ।
 सेज बिछाई रूच रूच के, एही तुमारा विश्राम ॥१॥
 अर्स कह्या दिल मोमिन, अर्स में सब बिसात ।
 निमख न्यारी क्यों होए सके, रूह निसबत हक जात ॥२॥
 इस्क सुराही ले हाथ में, पिलाओ आठों जाम^१ ।
 अपनी अंगना जो अर्स की, ताए दीजे अपनों ताम^२ ॥३॥

इलम दिया आए अपना, भेजी साहेदी अल्ला कलाम ।
 रहें त्रिखावन्ती^१ हक की, सो चाहें धनी प्रेम काम ॥४॥
 फुरमान ल्याया दूसरा, जाको सुकजी नाम ।
 दर्ई तारतम ग्वाही ब्रह्मसृष्ट की, जो उतरी अव्वल से धाम ॥५॥
 खिलवत खाना अर्स का, बैठे बीच तखत स्यामा स्याम ।
 मस्ती दीजे अपनी, ज्यों गलित होऊं याही ठाम ॥६॥
 तुम लिख्या फुरमान में, हक अर्स मोमिन कलूब^२ ।
 सो सुकन पालो अपना, तुम हो मेरे मेहेबूब ॥७॥
 और भी लिख्या समनून को, हक दोस्ती में पातसाह ।
 सो कौल पालो अपना, मैं देखूं मेहेबूब की राह ॥८॥
 कहूं अबलों जाहेर ना हुई, अर्स बका हक सूरत ।
 हिरदे आओ तो कहूं, इत बैठो बीच तखत ॥९॥
 ए वजूद न खूबी ख्वाब की, ए कदम हक बका के ।
 दूँख्या बुजरकों इफ्तदाए^३ से, इत जाहेर न हुए कबूं ए ॥१०॥
 उज्जल लाल तली पांउं की, रंग रस भरे कदम ।
 छब सलूकी अंग अर्स की, रूह से छूटे क्यों दम ॥११॥
 मिहीं लीकें चरनों तली, रूह के हिरदे से छूटत नाहें ।
 ए निसबत भई अर्स की, लिखी रूह के ताले^४ माहें ॥१२॥
 नख अंगूठे अंगुरियां, सिफत न पोहोंचे सुकन^५ ।
 आसमान जिमी के बीच में, रूह याही में देखे रोसन ॥१३॥
 एक छोटे नख की रोसनी, ऐसा तिन का नूर ।
 आसमान जिमी के बीच में, जिमी जरे जरा भई सब सूर ॥१४॥
 देख सलूकी^६ अंगूठों, और अंगुरियों सलूकी ।
 उतरती छोटी छोटेरी, जो हिरदे में छवि फबी^७ ॥१५॥

लाल नरम उज्जल अंगुरी, फना टांकन घूटी काड़ों ।
 आठों जाम रस बका, पोहोंचे रूह के तालू मों ॥१६॥
 लाल लांकें लाल एड़ियां, पाउं तली अति उज्जल ।
 ए पाउं बसत जिन हैयड़े, सोई आसिक दिल ॥१७॥
 बसत सुखाले^१ नरमाई में, आसमान लग रोसन ।
 ए पाउं प्यारे मासूक के, जो कोई आसिक मोमिन ॥१८॥
 आसिक बसत अर्स तले, या बसे अर्स के माहें ।
 ए खुसबोए मस्ती अर्स की, निसदिन पीवे ताहें ॥१९॥
 सुन्दर सलूकी छब सोभित, रंग रस प्यार भरे ।
 सोई मोमिन अर्स दिल, जित इन हकें कदम धरे ॥२०॥
 ए सुख देत अर्स के, कोई नहीं निमूना इन ।
 ए सुख जानें अरवा अर्स की, निसबत हक सों जिन ॥२१॥
 रूहें इस्क मांगें धनी पे, पकड़ धनी के कदम ।
 जो छोड़े इन कदम को, सो क्यों कहिए आसिक खसम ॥२२॥
 नरम तली लाल उज्जल, आसिक एही जीवन ।
 धनी जिन छोड़ाइयो कदम, जाहेर या बातन ॥२३॥
 प्यारे कदम राखों छाती मिने, और राखों नैनों पर ।
 सिर ऊपर लिए फिरों, बैठो दिल को अर्स कर ॥२४॥
 तखत धर्या हकें दिल में, राखूं दिल के बीच नैनन ।
 तिन नैनों बीच नैना रूह के, राखों तिन नैनों बीच तारन ॥२५॥
 तिन तारों बीच जो पुतली, तिन पुतलियों के नैनों माहें ।
 राखूं तिन नैनों बीच छिपाए के, कहूं जाने न देऊँ क्याहें ॥२६॥
 जाथें चरन जुदे होंए, सो आसिक खोले क्यों नैन ।
 ए नैन कायम नूरजमाल के, जासों आसिक पावे सुख चैन ॥२७॥

एक अंग छोड़ दूजे अंग को, क्यों आसिक लेने जाए ।
 ए कदम छोड़े मासूक के, सो आसिक क्यों केहेलाए ॥२८॥
 एक रूह लगी एक अंग को, सो क्यों पकड़े अंग दोए ।
 मासूक अंग दोऊ बराबर, क्यों छोड़े पकड़े अंग सोए ॥२९॥
 जो कोई अंग हलका लगे, और दूजा भारी होए ।
 एक अंग छोड़ दूजा लेवहीं, पर आसिक न हलका कोए ॥३०॥
 दूजा अंग आया नहीं, तो लों एक अंग क्यों छूटत ।
 यों और अंग ले ना सके, एकै अंग में गलित ॥३१॥
 जो आसिक भूखन पकड़े, सो भी छूटे न आसिक सें ।
 देख भूखन हक अंग के, आसिक सुख पावे यामें ॥३२॥
 हक के अंग के सुख जो, सो जड़ भी छोड़े नाहें ।
 तो क्यों छोड़े अरवा अर्स की, हक अंग आया हिरदे माहें ॥३३॥
 हेम नंग सब चेतन, अर्स जिमी जड़ ना कोए ।
 दिल चाह्या होत सब चीज का, चीज एकै से सब होए ॥३४॥
 सब रंग गुन एक चीज में, नरम जोत खुसबोए ।
 सब गुन रखे हक वास्ते, सुख लेवें हक का सोए ॥३५॥
 आसिक एक अंग अटके, तिनको एह कारन ।
 दोऊ अंग मासूक के, किन छोड़े लेवें किन ॥३६॥
 नूर बिना अंग कोई ना देख्या, और सब अंगों बरसत नूर ।
 अंबर में न समाए सके, इन अंगों का जहूर ॥३७॥
 एक अंग मासूक के कई रंग, तिन रंग रंग कई तरंग ।
 एक लेहेर पोहोँचावे उमर लग, यों छूटे न आसिक से अंग ॥३८॥
 जो कदी मेहेर करें मासूक, तो दूजा अंग देवें दिल आन ।
 तो सुख लेवे सब अंग को, जो सब सुख देवे सुभान ॥३९॥

जो कदी आसिक खोले नैन को, पेहेले हाथों पकड़े दोऊ पाए ।
ए नैन अंग नूरजमाल के, सो इन आसिक से क्यों जाए ॥४०॥

॥ मंगला चरण सम्पूर्ण ॥

इजार जो नीली लाहि की, नेफा लाल अतलस ।
नेफे बेल मोहोरी कांगरी, क्यों कहूं नंग जरी अर्स ॥४१॥

काड़ों पर पीड़ी तले, मिहीं चूड़ी सोभित इजार ।
जोत करे माहें दावन, झाई उठे झलकार ॥४२॥

इजार बंध नंग कई रंग, और कई कांगरी बेल माहें ।
फूल पात कई नकस, सब्द न पोहोंचे ताहें ॥४३॥

कई रंग नंग माहें रेसम, रंग नंग धागा न सूझत ।
हाथ को कछू लगे नहीं, नरम जोत अतंत ॥४४॥

अतंत नाड़ी फुन्दन, जोत को नहीं पार ।
एही जानों भूल अपनी, सोभा ल्याइए माहें सुमार ॥४५॥

रंग नीला कह्या इजार का, कई रंग नंग इन मों ।
तेज जोत जो झलकत, और कछू लगे ना हाथ कों ॥४६॥

सब अंग पीछे कहंगी, पेहेले कहूं पाग बांधी जे ।
सिफत न पोहोंचे अंग को, तो भी कह्या चाहे रूह ए ॥४७॥

हाथों पाग बांधी तो कहिए, जो हुकमें न होवे ए ।
कई कोट पाग बनें पल में, जिन समें दिल चाहे जे ॥४८॥

पर हकें बांधी पाग रुच के, नरम हाथों पेच फिराए ।
आसिक देखे बांधते, अतंत रूह सुख पाए ॥४९॥

इन विध सब सिनगार, कहियत इन जुबांए ।
तो कह्या फना का सब्द, बका को पोहोंचत नाहें ॥५०॥

चुप किए भी ना बने, जाको ए ताम^१ दिया खसम ।
 तार्थें ज्यों त्यों कह्या चाहिए, सो कहावत हक हुकम ॥५१॥
 बांधी पाग समार के, हाथ नरम उज्जल लाल ।
 इन पाग की सोभा क्यों कहूं, मेरा साहेब नूरजमाल ॥५२॥
 लाल पाग बांधी लटकती, कछू ए छबि कही न जाए ।
 पेच दिए कई विध के, हिरदे सों चित्त ल्याए ॥५३॥
 पाग बनाई कोई भांत की, बीच में कटाव फूल ।
 बीच बेली बीच कांगरी, रूह देख देख होए सनकूल ॥५४॥
 जो आधा फूल एक पेच में, आवे दूजे पेच का मिल ।
 यों बनी बेल फूल पाग की, देख देख जाऊं बल बल ॥५५॥
 कई रंग नंग फूल पात में, ए जिनस न आवे जुबांए ।
 न आवे मुख केहेनी मिने, जो रूह देखे हिरदे माहें ॥५६॥
 पाग बांधी कोई तरह की, जो तरह हक दिल में ल्याए ।
 बल बल जाऊं मैं तिन पर, जिन दिल पेच फिराए ॥५७॥
 पाग ऊपर जो दुगदुगी, ए जो बनी सब पर ।
 जोत हीरा पोहोंचे आकास लों, पीछे पाच रहे क्यों कर ॥५८॥
 मानिक तहां मिलत है, पोहोंचत तित पुखराज ।
 नीलवी तो तेज आसमानी, उत पांचों रहे बिराज ॥५९॥
 कांध पीछे केस नूर झलके, लिए पाग में पेच बनाए ।
 गौर पीठ सुध सलूकी, जुबां सके ना सिफत पोहोंचाए ॥६०॥
 कण्ठ खभे दोऊ बांहोंड़ी, पेट पांसली बीच हैड़ा ।
 रूह मेरी इत अटके, देख छबि रंग रस भर्या ॥६१॥
 मच्छे दोऊ बाजूअ के, सलूकी अति सोभित ।
 रंग छब कोमल दिल की, आसिक हैड़े बसत ॥६२॥

हस्त कमल की क्यों कहूं, पोहोंचे हथेली कई रंग ।
 लाल उज्जल रंग केहेत हों, इन रंग में कई तरंग ॥६३॥
 कोनी काड़े कलाइयां, रंग नरमाई सलूक ।
 ऐसा सखत मेरा जीवरा, और होवे तो होए टूक टूक ॥६४॥
 ना तेहेकीक होवे रंग की, ना छबि होए तेहेकीक ।
 क्यों कहूं बीसों अंगुरियां, और मिहीं हथेलियां लीक ॥६५॥
 नरम अंगुरियां पतली, लगें मीठी मूठ वालत ।
 ए कोमलता क्यों कहूं, जिन छबि अंगुरी खोलत ॥६६॥
 क्यों देऊं निमूना नख का, इन अंगों नख का नूर ।
 देत न देखाई कछुए, जो होवे कोटक सूर ॥६७॥
 अब देखो पेट पांसली, और लांक चलत लेहेकत ।
 ए सोभा सलूकी लेऊं रूह में, तो भी उड़े न जीवरा सखत ॥६८॥
 देख हरवटी अति सुन्दर, और लाल गाल गौर ।
 लांक अधुर बीच हरवटी, क्यों कहूं नूर जहूर ॥६९॥
 गाल सोभा अति देत हैं, क्यों कहूं इन मुख छब ।
 उज्जल लाल रंग सुन्दर, क्यों कहूं सलूकी फब ॥७०॥
 कानन की किन विध कहूं, जो सुने आसिक के बैन ।
 सो सुन देवें पड़उत्तर, ज्यों आसिक पावे सुख चैन ॥७१॥
 मुख दंत लाल अधुर छब, मधुरी बोलत मुख बान ।
 खँच लेत अरवाह को, ए जो बानी अर्स सुभान ॥७२॥
 नैन अनियारे बंकी छब, चंचल चपल रसाल ।
 बान बंके मारत खँच के, छाती छेद निकसत भाल ॥७३॥
 लाल तिलक निलवट दिए, अति सुन्दर सुखदाए ।
 असल बन्या ऐसा ही, कई नई नई जोत देखाए ॥७४॥

नैन कान मुख नासिका, रंग रस भरे जोवन ।
 हाथ पांउं कण्ठ हैयड़ा, सब चढ़ते देखे रोसन ॥७५॥
 नख सिख बन्ध बन्ध सब अंग, मानों सब चढ़ते चंचल ।
 छब फब सोभा सुन्दर, तेज जोत अंग सब बल ॥७६॥
 सुन्दर ललित कोमल, देख देख सब अंग ।
 तेज जोत नूर सब चढ़ते, सब देखत रस भरे रंग ॥७७॥
 कटि कोमल दिल हैयड़ा, अति उज्जल छाती सुन्दर ।
 चढ़ते इस्क अंग अधिक, ऐसा चुभ्या रूह के अन्दर ॥७८॥
 इतथें रूह क्यों निकसे, जो इन मासूक की आसिक ।
 छोड़ छाती आगे जाए ना सके, मार डारत मुतलक ॥७९॥
 जिन विध की ए इजार, तापर लग बैठा दावन ।
 सेत रंग दावन देखिए, आगूं इजार रंग रोसन ॥८०॥
 गौर रंग जामा उज्जल, जुड़ बैठा अंग ऊपर ।
 अति बिराजत इन विध, ए खूबी कहूं क्यों कर ॥८१॥
 ए जुगत जामें की क्यों कहूं, झलकत है चहुं ओर ।
 बाहें चोली और दावन, सोभा देत सब ठौर ॥८२॥
 पीछे कटाव जो कोतकी, रंग नंग जरी झलकत ।
 चीन मोहोरी दोऊ हाथ की, ए सुन्दर जोत अतन्त ॥८३॥
 बेल नकस दोऊ बगलों, और बेल गिरवान बन्ध ।
 चूड़ी समारी बाहन की, क्यों कहूं सोभा सनन्ध ॥८४॥
 छोटी बड़ी न जाड़ी पतली, सबे बनी एक रास ।
 उतरती मिहीं मिहीं से, जुबां क्या कहे खूबी खास ॥८५॥
 पीला पटुका कमरें, रंग नंग छेड़े किनार ।
 बेल पात फूल नकस, होत आकास उद्योत कार ॥८६॥

लाल नीले सेत स्याम रंग, किनार बेल कटाव ।
 सात रंग छेड़ों मिने, क्यों कहूं जुगत जड़ाव ॥८७॥
 पाच पाने मोती नीलवी, हीरे पोखरे मानिक नंग ।
 बेल कटाव कई नकस, कहूं गरभित केते रंग ॥८८॥
 जामें में झाँई झलकत, हरे रंग इजार ।
 लाल बन्ध और फुन्दन, कई रंग नंग अपार ॥८९॥
 कहूं अंगों का बेवरा, जुदे जुदे भूखन ।
 ए जो जवेर अर्स के, कहूं पेहेले भूखन चरन ॥९०॥
 चारों जोड़े चरन के, नरमाई सुगन्ध सुखकार ।
 बानी मधुरी बोलत, सोभा और झलकार ॥९१॥
 भूखन मेरे धनी के, किन विध कहूं जो ए ।
 के कहूं खूबी नरमाई की, के कहूं अम्बार तेज के ॥९२॥
 एक नंग के कई रंग, सोभे इन बाजे झाँझर ।
 पांच नंग रंग एक के, अति मीठी बोले घूंघर ॥९३॥
 नाके वाले जवेर के, माहें नरम जोत गुन दोए ।
 तीसरी बानी माधुरी, चौथा गुन खुसबोए ॥९४॥
 सोई पांच रंग एक नंग में, तिनकी बनी जो कड़ी ।
 देत देखाई रंग नंग जुदे, जानों किन घड़ के जड़ी ॥९५॥
 कांबी एक जवेर की, तामें झीने रंग नंग दस ।
 दिल चाहे भूखन सब बने, सो हक भूखन ए अर्स ॥९६॥
 मैं देखे जवेर अर्स के, ज्यों हेम भूखन होत इत ।
 कई रंग नंग मिलाए के, बहु विध भूखन जड़ित ॥९७॥
 किन जड़े घड़े ना समारे, भूखन आवत दिल चाहे ।
 अर्स जवेर कंचन ज्यों, जानों असल ऐसे ही बनाए ॥९८॥

दस रंग के जवेर की, माहें कई नकस मुंदरी ।
 दोए अंगूठी अंगूठों, आठों जिनस आठ अंगुरी ॥९९॥
 ए नरम अंगुरियां अतन्त, नख सोभित तेज अपार ।
 ए देखो भूल अकल की, सोभा ल्याइए माहें सुमार ॥१००॥
 पोहोंचे और हथेलियां, केहे न सकों सलूकी ए ।
 छवि देख रंग हाथन की, बल बल जाऊं इनके ॥१०१॥
 कड़ियां दोऊ काड़ो सोहे, सोभा तेज धरत ।
 लाल नंग नीले आसमानी, जोत अवकास भरत ॥१०२॥
 पोहोंची पांचों नंग की, जुबां केहे न सके जिनस ।
 पाच पांने मोती नीलवी, लरें हीरे अति सरस ॥१०३॥
 बाजूबंध की क्यों कहूं, जो बिराजे बाजू पर ।
 कई मिहीं नकस कटाव, जोत भरी जिमी अम्बर ॥१०४॥
 एक नंग एक रंग का, एक रंगे नंग अनेक ।
 इन विध के अर्स भूखन, सो कहां लो कहूं विवेक ॥१०५॥
 पांच रंग जरी फुन्दन, सोभा लेत अतंत ।
 पांच रंग जवेर झलके, फुन्दन सोहे लटकत ॥१०६॥
 नरम जोत खुसबोए, दिल चाही सोभाए ।
 कई विध सुख लेवे हक के, सुख भूखन कहे न जाए ॥१०७॥
 बीच हार मानिक का, और हीरों हार उज्जल ।
 पाच मोती और नीलवी, लसनियां अति निरमल ॥१०८॥
 और निरमल माहें दुगदुगी, तामें नंग करत अति बल ।
 बीच हीरा छे गिरदवाए, जोत आकास किया उज्जल ॥१०९॥
 गौर गलस्थल धनी के, उज्जल लाल सुरंग ।
 झाई उठे इन नूर में, करन फूल के नंग ॥११०॥

निरख नासिका धनी की, लटके मोती पर लाल ।
 लेत अमी रस अधुर पर, रस अमृत रंग गुलाल ॥१११॥
 करन फूल की क्यों कहूं, उठत किरन कई रंग ।
 तिन नंग रंग कई भासत, रंग रंग में कई तरंग ॥११२॥
 करत मानिक माहें लालक, हीरे मोती सेत उजास ।
 और पाच करत है नीलक, लेत लेहेरी जोत आकास ॥११३॥
 तेज भी मानिक तित मिले, पोहोंचत तित पुखराज ।
 नीलवी तो तेज आसमानी, रहे रंग नंग पांचों बिराज ॥११४॥
 पाँच फूल कलंगी पर, उपरा ऊपर लटकत ।
 कोई ऐसी कुदरत नूर की, लेहेरी आकास में झलकत ॥११५॥
 एता इन कलंगी मिने, एकै हीरे का नूर ।
 आसमान जिमी के बीच में, मानों कोटक ऊगे बका सूर ॥११६॥
 जंग जवेर करत हैं, आसमान देखिए जब ।
 लरत बीच आकास में, नजरों आवत है तब ॥११७॥
 कहे महामत अरवा अर्स से, जो कोई आई होए उतर ।
 सो इन सरूप के चरन लेय के, चलिए अपने घर ॥११८॥

॥प्रकरण॥८॥चौपाई॥६५०॥

श्री ठकुरानीजी का सिनगार दूसरा-मंगला चरण

बरनन करूं बड़ी रूह की, जो हक नूर का अंग ।
 रूहें नूर इन अंग के, जो हमेसा सब संग ॥१॥
 हक जात अंग अर्स का, क्यों कर बरनन होए ।
 इन सरूप को सुपन भोम का, सब्द न पोहोंचे कोए ॥२॥
 किन देख्या सुन्या न तरफ पाई, तो क्यों दुनियां सुन्या जाए ।
 जो अरवा होसी अर्स की, सो सुन के सुख पाए ॥३॥

मेरी रूह चाहे वरनन करूं, होए ना बिना अर्स इलम ।
 वस्तर भूखन अर्स के, इत पोहोंचे ना सुपन का दम ॥४॥
 पेहेने उतारे इन जिमी, नाहीं अर्स में चल विचल ।
 इत नकल कोई है नहीं, अर्स वाहेदत सदा असल ॥५॥
 घट बढ़ अर्स में है नहीं, मिटे न कबूं रोसन ।
 तिन सरूप को इन मुख, क्यों कर होए वरनन ॥६॥
 एक पेहेर दूजा उतारना, तब तो घट बढ़ होए ।
 जब जैसा जित चित्त चाहे, तब तित तैसा बनत सोए ॥७॥
 अर्स अरवा चाहे दिल में, सो होए माहें पल एक ।
 जिन अंग जैसा वस्तर, होए खिन में कई अनेक ॥८॥
 सुन्दर सरूप सोभा लिए, सिनगार वस्तर भूखन ।
 रस रंग छवि सलूकी, चाहे रूह के अन्तस्करन ॥९॥
 वस्तर भूखन अंग अर्स के, सो सबे हैं चेतन ।
 सब सुख देवें रूह को, तो क्यों न देवें नैन श्रवन ॥१०॥
 नया सिनगार साजत, तब तो नया पेहेन्या कह्या जात ।
 नया पुराना अर्स में नहीं, पर पोहोंचे न इतकी बात ॥११॥
 जो सिफत बड़ी चित्त लीजिए, बड़ी अकल सो जान ।
 फना बका को क्या कहें, ताथें पोहोंचत नहीं जुबान ॥१२॥
 तो भी रूह मेरी ना रहे, हक वरनन किया चाहे ।
 हक इलम आया मुझ पे, सो या बिन रह्यो न जाए ॥१३॥
 ना तो बैठ झूठी जिमी में, ए बका वरनन क्यों होए ।
 इलम हुकम खेंचे रूह को, अकल जुबां कहे सोए ॥१४॥
 यासों रूह सुख पावत, अर्स रूहें पावें आराम ।
 कहूं सिखाई रूहअल्ला की, ले साहेदी अल्ला कलाम ॥१५॥

हक इलम सिर लेय के, वरनन करूँ हक जात ।
 रूह मेरी सुख पावहीं, हिरदे बसो दिन रात ॥१६॥
 मोमिन दिल अर्स कह्या, सो अर्स बसे जित हक ।
 निसबत मेहेर जोस हुकम, और इस्क इलम बेसक ॥१७॥
 ए बरकत हक अर्स में, तो दिल अर्स कह्या मोमिन ।
 तो वरनन होए अर्स का, जो यों दिल होए रोसन ॥१८॥
 बारीक बातें अर्स की, सो जानें अर्स के तन ।
 जीवत लेसी सो सुख, जिनका दूट्या अन्तस्करन ॥१९॥
 छाती मेरी कोमल, और कोमल तुमारे चरन ।
 बासा करो तिन पर, तुम सों निसबत अर्स तन ॥२०॥
 मेरी छाती दिल की कोमल, तिन पर राखो नरम कदम ।
 इतहीं सेज बिछाए देऊँ, जुदे करो जिन दम ॥२१॥
 रूह छाती इनसे कोमल, तिनसे पाँउं कोमल ।
 इत सुख देऊँ मासूक को, सुख यों लेऊँ नेहेचल ॥२२॥
 मेरी रूह नैन की पुतली, बीच राखूं तिन तारन ।
 खिन एक न्यारी जिन करो, ए चरन बसें निस दिन ॥२३॥
 चरन तली अति कोमल, मेरी रूह के नैन कोमल ।
 निस दिन राखों इन पर, जिन आवने देऊँ बीच पल^१ ॥२४॥
 या रूह नैन की पुतली, तिन नैनों बीच तारन ।
 इत रहे सेज्या निस दिन, धरो उज्जल दोऊ चरन ॥२५॥
 मेरा दिल तुमारा अर्स है, माहें बहुबिध की मोहोलात ।
 कई सेज हिंडोले तखत, रूह नए नए रंगों बिछात ॥२६॥
 आसा पूरो सुख देओ, नए नए कराऊँ सिनगार ।
 द्यो पूरी मस्ती ना बेहोसी, सुख लेऊँ सब अंग समार ॥२७॥

अर्स तुमारा मुझ दिल, माहें अर्स की सब बिसात^१ ।
 खाना पीना सुख सिनगार, माहें सब न्यामत^२ हक जात ॥२८॥
 सब गुझ तुमारे दिल का, जिन मेरा दिल किया रोसन ।
 जेता मता बीच अर्स के, सब आया दिल मोमिन ॥२९॥
 तो कह्या अर्स दिल मोमिन, हक बैठें उठें खेलाए ।
 सुख बका हक अर्स रूहें, सिफत क्यों कहे दिल जुबांए ॥३०॥
 पर दिल के जो अंग हैं, धनी अर्स तुमारा सोए ।
 तुमें देखें कहे बातें सुने, लेवे तुमारी बानी की खुसबोए ॥३१॥
 पिए तुमारी सुराही का, कई स्वाद फूल सराब ।
 ऐसी लेऊं मस्ती मेहेबूब की, ज्यों उड़ जावे ख्वाब ॥३२॥
 एक स्वाद दिल देखे तुमको, सुने तुमारी बानी की मिठास ।
 लेऊं खुसबोए बोलूं तुम सों, और क्यों कहूं दुलहा विलास ॥३३॥
 जेता सुख तुमारे अर्स में, सो सब हमारे दिल ।
 ए सुख रूह मेरी लेवहीं, जो दिए इन अर्स में मिल ॥३४॥
 रूह बरनन करे क्या होए, जोलों स्वाद न ले निसबत ।
 इस्क इलम जोस हुकम, ए सब मेहेरें पाइए न्यामत ॥३५॥
 दिल के अंगों बिना हक के, इत स्वाद लीजे क्यों कर ।
 देखे सुने बोले बिना, तो क्या अर्स नाम धर्या धनी बिगर ॥३६॥
 जो मासूक सेज न आइया, देख्या सुन्या न कही बात ।
 सुख अंग न लियो इन सेज को, ताए निरफल गई जो रात ॥३७॥
 अर्स तुमारा मुझ दिल, माहें अर्स की सब बिसात^३ ।
 सब न्यामतें इनमें, अर्स बका हक जात ॥३८॥

पेहेले बरनन करूं सिर राखड़ी, पीछे बरनन करूं सब अंग ।
अखंड सिनगार अर्स को, मेरी रूह हमेसा संग ॥३९॥

मंगला चरण सम्पूर्ण

सिर पर बनी जो राखड़ी, कहूं किन बिध सोभा ए ।
आसमान जिमी के बीच में, एकै जोत खड़ी ले ॥४०॥
गिरदवाए मानिक बने, बीच हीरे की जोत ।
किनार ऊपर जो नीलवी, हुई जिमी अंबर उद्योत ॥४१॥
सेंथे भी सिर कांगरी, और सिर कांगरी पांन ।
इन सिर सोभा क्यों कहूं, अलेखे अमान ॥४२॥
माहें हारें खजूरे बूटियां, बीच फूल करत हैं जोत ।
जुदे जुदे रंगों जवेर, ठौर ठौर रोसनी होत ॥४३॥
लाल सेंथे जोत जवेर की, दोए पटली समारी सिर ।
बनी नंगन की कांगरी, बल बल जाऊं फेर फेर ॥४४॥
निलवट^१ पर सर^२ मोतिन की, ऊपर नीलवी बीच मानिक ।
दोऊ तरफों तीनों सरें, तीनों बराबर माफक ॥४५॥
इन तीनों पर कांगरी, बनी सेंथे बराबर ।
पांन कटाव सेंथे पर, ए जुगत कहूं क्यों कर ॥४६॥
मानिक मोती नीलवी, हेम हीरा पुखराज ।
इन मुख सोभा क्यों कहूं, सिर खूबी रही बिराज ॥४७॥
बीच फूल कटाव कई, राखड़ी के गिरदवाए ।
ए जुगत बनी मूल लग, गूंथी नंग मोती बेनी^३ बनाए ॥४८॥
तीन नंग रंग गोफने, तिन एक एक में तीन रंग ।
हीरा मानिक नीलवी, सोभित कंचन संग ॥४९॥

तीनों गोफने घूंघरी, बेनी गूंथी नई जुगत ।
 बल बल जाऊं देख देख के, रूह होए नहीं तृपित ॥५०॥
 चारों बंध बेनी तले, नीले पीले सोभित ।
 सोभे नरम बंध चोलीय के, खूबी साड़ी तले देखत ॥५१॥
 बेनी सोभित गौर पीठ पर, चोली और बंध चोली के ।
 सब देत देखाई साड़ी मिने, सब सोभा लेत सनंध ए ॥५२॥
 लाल साड़ी कई नकस, माहें अनेक रंग के नंग ।
 मिहीं नकस न होवे गिनती, करें जवेर माहें जंग ॥५३॥
 सिर पर साड़ी सोभित, नीली पीली सेत किनार ।
 तिन पर सोहे कांगरी, करें पांच नंग झलकार ॥५४॥
 साड़ी कोर किनार पर, नंग कांगरी सोभित ।
 फूल बेल कई खजूरे, कई छेड़ों मिने झलकत ॥५५॥
 कई छापे बूटी नकस, नंग साड़ी बीच अपार ।
 कई नंग रंग झलके बीच में, सोभा न आवे माहें सुमार ॥५६॥
 मुख उज्जल गौर लालक लिए, छवि जाए न कही जुबांए ।
 देख देख सुख पावत, रूह हिरदे के माहें ॥५७॥
 मुख चौक नेत्र नासिका, ए छवि अंग अर्स के ।
 असलें सिफत न पोहोंचहीं, बुध माफक कही ए ॥५८॥
 मुखारबिन्द स्यामाजीय को, रूह देख देख सुख पाए ।
 निलवट सोहे चांदलो, रूह बलिहारी ताए ॥५९॥
 रंग नीले जोत पाच में, रूह इतथें क्यों निकसाए ।
 जो जोत देखूं मानिक, तो वाही में डूब जाए ॥६०॥
 करे आकास मोती उज्जल, जोत लटके लेवे तरंग ।
 आसिक रूह क्यों निकसे, क्योंए न छूटे लगयो दिल रंग ॥६१॥

श्रवणों सोहे पानड़ी, मानिक के रंग सोए ।
 और रंग माहें नीलवी, जोत करत रंग दोए ॥६२॥
 मोती पांने पुखराज, लरें लटकत इन ।
 तरंग उठत आकास में, किरना करत रोसन ॥६३॥
 मुरली^१ सोभित मुख नासिका, लटके मोती नंग लाल ।
 निरख देखूं माहें नीलवी, तो तबहीं बदले हाल ॥६४॥
 न्यारी गति नैनन की, अति अनियारे लोचन^२ ।
 उज्जल माहें लालक लिए, अतंत तेज तारन ॥६५॥
 भौं भृकुटी^३ अति सोभित, रंग स्याम अंग गौर ।
 केहेनी जुबां न आवत, कछू अर्स रूहें जानें जहूर ॥६६॥
 सोभा लेत हैं टेढ़ाई, नैना रंग रस भरे ।
 ए सोई रूहें जानहीं, जाकी छाती छेद परे ॥६७॥
 मीठे नैन रसीले निरखत, माहें सरम^४ देत देखाए ।
 प्यार पूरा देखत, मेहेर भरे सुखदाए ॥६८॥
 अनेक गुन इन नैन में, गिनती न होवे ताए ।
 सुख देत अलेखे सब अंगों, नैना गुन क्यों ए ना गिनाए ॥६९॥
 सनकूल मुख अति सुंदर, गौर हरवटी सलूक ।
 लांक अधुर दंत देखत, जीव होत नहीं टूक टूक ॥७०॥
 मुख चौक अति सुन्दर, अति सुन्दर दोऊ गाल ।
 कही न जाए छबि सलूकी, निपट उज्जल माहें लाल ॥७१॥
 सात रंग माहें झलकत, लेहेरें लेत दोऊ झाल ।
 दोऊ फूल सोभित मुख झालके, जुबां क्या कहे इन मिसाल ॥७२॥
 फिरते मोती सोभित, माहें मानिक पाच कुंदन ।
 हीरे लसनिए नीलवी, सातों अम्बर करे रोसन ॥७३॥

हेम नंग नाम लेत हों, जानों के पेहेने बनाए ।
 ए बिध अर्स में है नहीं, जुबां सके न सिफत पोहोंचाए ॥७४॥
 कई रंग करे एक खिन में, नई नई जुगत देखाए ।
 सोहे हमेसा सब अंगों, पेहेने सोभित चित्त चाहे ॥७५॥
 चीज सबे अर्स चेतन, वस्तर या भूखन ।
 सुख लेत हक के अंग का, यों करत अति रोसन ॥७६॥
 हर नंग में सब रंग हैं, हर नंग में सब गुन ।
 सो नंग ले कछू न बनावत, सब दिल चाह्या होत रोसन ॥७७॥
 वस्तर भूखन केते कहूं, हेम रेसम रंग नंग ।
 ना पेहेन्या ना उतारिया, ए दिल चाह्या सोभित अंग ॥७८॥
 यों दिल चाह्या वस्तर, और दिल चाह्या भूखन ।
 जब जिन अंग दिल जो चाहे, आगूं रोसन होए माहें खिन ॥७९॥
 सुन्दर सख्प छबि देख के, फेर फेर जाऊं बल बल ।
 जो रूह होवे अर्स की, सो याही में जाए रल गल ॥८०॥
 नरम लांक अति बारीक, पेट पांसली अति गौर ।
 ए छबि रूह रंग तो कहे, जो होवे अर्स सहूर ॥८१॥
 बल बल जाऊं मुख सलूकी, बल बल जाऊं रंग छब ।
 बल बल जाऊं तेज जोत की, बल बल जाऊं अंग सब ॥८२॥
 स्याम चोली अंग गौर पर, सोभा लेत अतंत ।
 सोहे बेली कटाव, जुबां कहा कहे सिफत ॥८३॥
 मोहोरी पेट और खड़पे, चोली नकस कटाव ।
 बाजू खभे उर ऊपर, मानो के फूल जड़ाव ॥८४॥
 पांच हार अति सुन्दर, हीरे मानिक मोती लसन ।
 नीलवी हार आसमान लों, जंग पांचों करें रोसन ॥८५॥

इन नंगों जोत तब पाइए, जब नजर दीजे आसमान ।
 सब जोत जंग करत हैं, कोई सके न काहू भान ॥८६॥
 जो नंग पेहेले देखिए, पीछे देखिए आकास ।
 तब याही की जोत बिना, और पाइए नहीं प्रकास ॥८७॥
 बीच हारों के दुगदुगी, पाच पांने हीरे नंग ।
 माहें लसनिए नीलवी, करें पांचों आपुस में जंग ॥८८॥
 पांचों हारों के ऊपर, दोरा देखत जड़ाव ।
 कई बेल फूल पात नकस, कह्यो न जाए कटाव ॥८९॥
 मोती मानिक पांने लसनिएं, पाच हेम पुखराज ।
 और भूखन कई सोभित, रह्या सब पर डोरा बिराज ॥९०॥
 कांठले ऊपर चोलीय के, बेल धरत अति जोत ।
 और भी मानिक मोती नीलवी, डोरा तिन पर करे उद्योत ॥९१॥
 चार सरें इत चीड़की, हर सर में रंग दस ।
 सो रंग इन जुबां न आवहीं, रंग रूह चाहिल अर्स ॥९२॥
 कण्ठ-सरी इन ऊपर, रही कण्ठ को मिल ।
 न आवे निमूना इनका, जाने आसिक रूह का दिल ॥९३॥
 नाम नंगों का लेत हों, केहेत हों जड़ाव जुबांए ।
 सब्दातीत तो कहावत, जो सिफत इत पोहोंचत नाहें ॥९४॥
 दोऊ बाजू बन्ध बिराजत, तामें केहेत जड़ाव ।
 माहें रंग नंग कई आवत, ए जड़ाव कह्या इन भाव ॥९५॥
 जो सोभा बाजू-बन्ध में, हिस्सा कोटमा कह्या न जाए ।
 मैं कहूं इन दिल माफक, वह पेहेनत हैं चित्त चाहे ॥९६॥
 स्याम सेत लाल नीलवी, बाजू-बंध और फुमक ।
 तिन फुन्दन जरी झलकत, लेत लेहेरी जोत लटकत ॥९७॥

मोहोरी तले जो कंकनी, स्वर मीठे इन बाजत ।
 नंग कटाव ए कांगरी, चूड़ पर जोत अतन्त ॥९८॥
 चूड़ कोनी काड़े लग, चूड़ी चूड़ी हर नंग ।
 नंग नंग कई रंग उठें, तिन रंग रंग में कई तरंग ॥९९॥
 इन विध के रंग इन जुबां, क्यों कर आवे सुमार ।
 न आवे सुमार रंग को, ना कछू जोत को पार ॥१००॥
 चूड़ आगूं डोरे दो सोभित, और कंकनी सोभे ऊपर ।
 दोऊ तरफों तेज जोत के, कंकनी बोलत मीठे स्वर ॥१०१॥
 डोरे कंचन नंग के, तिन आगूं नवघरी ।
 नव रंग नवघरी मिने, रही आकास जोत भरी ॥१०२॥
 पोहोंचे हथेली हाथ के, अतन्त रंग उज्जल ।
 बलि जाऊं छवि लीकों पर, निपट अति कोमल ॥१०३॥
 दोऊ हाथ की अंगुरी, पतलियां कोमल ।
 चरन न छूटे आसिक से, इतथें न निकसे दिल ॥१०४॥
 पांच पांच अंगुरी जुदी जुदी, अति कोमल छवि अंगुरी ।
 दोऊ अंगूठों आरसी, और आठों रंग आठ मुन्दरी ॥१०५॥
 पाच पांने^१ कंचन के, नीलवी और हीरे ।
 लसनिएं और गोमादिक, रंग पीत पोखरे ॥१०६॥
 दरपन रंग दोऊ अंगूठी, और नंगों के दरपन ।
 कर सिनगार तामें देखत, नख सिख^२ लग होत रोसन ॥१०७॥
 आगूं इन नख जोत के, होवें सूर कई कोट ।
 सो सूर न आवे नजरों, एक नख अनी की ओट ॥१०८॥
 ए झूठ निमूना इत का, हक को दिया न जाए ।
 चुप किए भी ना बने, केहे केहे रूह पछताए ॥१०९॥

नीली अतलस चरनियां, कई बेल कटाव नकस ।
 चीन किनारे जो देखों, जानों एक पे और सरस ॥११०॥
 माहें बेल फूल कई खजूरे, नंगै के वस्तर ।
 नरम सखत जो दिल चाहे, जोत सुगंध सब पर ॥१११॥
 नव रंग इन नाड़ी मिने, ताना बाना सब नंग ।
 जानों बने जवेरन के, नकस रेसम या रंग ॥११२॥
 अचरज अदभुत देखत, वस्तर या भूखन ।
 नरम खूबी खुसबोए, भर्या आसमान में रोसन ॥११३॥
 अर्स में नकल है नहीं, ज्यों अंग त्यों वस्तर भूखन ।
 जब जिन अंग जो चाहिए, तिन सौ बेर होए मिने खिन ॥११४॥
 जैसा सुख दिल चाहे, वस्तर भूखन तैसे देत ।
 सब गुन अर्स चीज में, सब सुख इस्क समेत ॥११५॥
 ए चरन अंग अर्स के, सब्द न पोहोंचे इत ।
 लाल उज्जल रंग सलूकी, मुख कही न जाए सिफत ॥११६॥
 मैं कहूं सिफत सलूकी, पर केहे न सकों क्योंए कर ।
 पूरा एक अंग केहे ना सकों, जो निकस जाए उमर ॥११७॥
 जो कदी कहूं नरमाई की, और लीकों सिफत ।
 आए जाए आरबल^१, सब्द न इत पोहोंचत ॥११८॥
 जो कहूं खूबी रंग की, जोत कहूं लाल उज्जल ।
 ए क्यों आवे सब्द में, जो कदम बका नेहेचल ॥११९॥
 रंग उज्जल नरमाई क्यों कहूं, और चरन की खुसबोए ।
 ए जुबां अर्स चरन की, क्यों कर बरनन होए ॥१२०॥
 फना टाकन घूटियां, और काड़े अति कोमल ।
 रंग सोभा सलूकी छोड़के, आगूं आसिक न सके चल ॥१२१॥

अब कहूं भूखन चरन के, कांबी कड़ली घूंघरी ।
 झलके नंग जुदे जुदे, इन पर इन बाजे झांझरी ॥१२२॥
 एक हीरे की झांझरी, दिल रूचती रंग अनेक ।
 नकस कटाव बूटी ले, ए किन विध कहूं विवेक ॥१२३॥
 पांच नंग की घूंघरी, दिल रूचती बोलत ।
 दिल चाहे रंग देखावत, दिल चाही सोभित ॥१२४॥
 कई रंग कड़ी में देखत, जानों के हेम नंग जड़ित ।
 सो सोभित सब दिल चाहे, नित नए रूप धरत ॥१२५॥
 कई बेल कड़ी में पात फूल, सब नंग नकस कटाव ।
 मानो हेम मिलाए के, कियो सो मिहीं जड़ाव ॥१२६॥
 या विध कांबी संध, या नंग या धात ।
 जैसा दिल में आवत, तैसा तित सोभात ॥१२७॥
 घड़े जड़े ना किन किए, दिल चाह्या सब होत ।
 दिल चाह्या मीठा बोलत, दिल चाही धरे जोत ॥१२८॥
 कहूं अनवट पाच के, माहें करत आंभलिया^१ तेज ।
 निरखत नखसिख सिनगार, झलकत रेजा रेज ॥१२९॥
 और अंगुरियों बिछिए, करे स्वर रसाल ।
 हीरे और लसनिएं, मानिक रंग अति लाल ॥१३०॥
 माहें और रंग हैं कई, कई नकस करें चित्र ।
 सोभा पर बलि जाइए, देख देख एह विचित्र ॥१३१॥
 जो सलूकी फनन की, और अंगुरी फनों तली ।
 ए बका बरनन कबूं न हुई, गई अव्वल से दुनी चली ॥१३२॥
 सलूकी नखन की, और छबि अंगुरियों ।
 खूबी सिफत चरन की, कही न जाए जुबां सों ॥१३३॥

जोत धरत आकास रोसनी, क्यों कर कहूं नख जोत ।
 मानों सूरज अर्स के, कोटक हुए उद्योत ॥१३४॥
 दोऊ अंगूठे चरन के, और खूबी अंगुरियों ।
 सोभा सुन्दर फनन की, आवत ना सिफत मों ॥१३५॥
 मिहीं लीकां^१ देखूं लांक में, इतहीं करूं विश्राम ।
 बल बल जाऊं देख देख के, एही रूह मोमिनों ताम^२ ॥१३६॥
 चरन तली लांक एड़ियां, उज्जल रंग अति लाल ।
 केहेते छबि रंग चरन की, अजूं लगत न हैड़े भाल ॥१३७॥
 दिल चाही खूबी सलूकी, दिल चाही नरम छब ।
 दिल चाह्या रंग खुसबोए, रही दिल चाही अंग फब ॥१३८॥
 यों दिल चाहे वस्तर, और दिल चाहे भूखन ।
 जब जिन अंग दिल जो चाहे, सो आगूंहीं बन्यो रोसन ॥१३९॥
 जिन अंग जैसा भूखन, दिल चाह्या सब होत ।
 खिन में दिल और चाहत, आगूं तैसी करे जोत ॥१४०॥
 खिन में सिनगार बदले, बिना उतारे बदलत ।
 रंग तित भूखन नए नए, रंग जो दिल चाहत ॥१४१॥
 दिल चाही सोभा धरे, दिल चाही खुसबोए ।
 दिल चाही करे नरमाई, जोत करे जैसी दिल होए ॥१४२॥
 रूहें बसत इन कदमों तले, जासों पाइए पेहेचान ।
 सब रूहें नूर इन अंग को, ए नूर अंग रहेमान ॥१४३॥
 ए जो अरवाहें अर्स की, पड़ी रहें तले कदम ।
 खान पान इनों इतहीं, रूहें रहें तले कदम ॥१४४॥
 याही ठौर रूहें बसत, रात दिन रहें सनकूल ।
 हक अर्स मोमिन दिल, तिन निमख न पड़े भूल ॥१४५॥

हक कदम हक अर्स में, सो अर्स मोमिन का दिल ।
छूटे ना अर्स कदम, जो याही की होए मिसल ॥१४६॥
ए चरन राखूं दिल में, और ऊपर हैड़े ।
लेके फिरों नैनन पर, और सिर पर राखों ए ॥१४७॥
भी राखों बीच नैन के, और नैनों बीच दिल नैन ।
भी राखों रूह के नैन में, ज्यों रूह पावे सुख चैन ॥१४८॥
महामत कहे इन चरन को, राखों रूह के अन्तस्करन ।
या रूह नैन की पुतली, बीच राखों तिन तारन ॥१४९॥
॥प्रकरण॥९॥चौपाई॥७९९॥

श्री राजजी का सिनगार तीसरा

फेर फेर सरूप जो निरखिए, नैना होंए नहीं तृपित ।
मोमिन दिल अर्स कह्या, लिखी ताले ए निसबत ॥१॥
चाहिए निसदिन हक अर्स में, और इत हक खिलवत ।
होए निमख न न्यारे इन दिल, जेती अर्स न्यामत ॥२॥
बरनन किया हक सूरत का, रूह देख्या चाहे फेर फेर ।
एही अर्स दिल रूह के, बैठे सिनगार कर ॥३॥
अब निस दिन रूह को चाहिए, फेर सब अंग देखे नजर ।
सूरत छवि सलूकी, देखों भूखन अंग वस्तर ॥४॥
सिनगार किया सब दुलहे, वस्तर या भूखन ।
अब बखत हुआ देखन का, देखों रूह के नैनन ॥५॥
सब अंग देखों फेरके, और देखों सब सिनगार ।
काम हुआ अपनी रूह का, देख देख जाऊं बलिहार ॥६॥
रूह चाहे बका सरूप की, करके नेक बरनन ।
देखों सोभा सिनगार, पेहेनाए वस्तर भूखन ॥७॥

कलंगी दुगदुगी पगड़ी, देख नीके फेर कर ।
 बैठ खिलवत बीच में, खोल रूह की नजर ॥८॥
 पेहेले देख पाग सलूकी, माहें कई बिध फूल कटाव ।
 जोत करी है किन बिध, जानों के नकस नंग जड़ाव ॥९॥
 देख कलंगी जोत सलूकी, जेता अर्स अवकास ।
 सो सारा ही तेज में, पूरन भया प्रकास ॥१०॥
 और खूबी इन कलंगी, और दुगदुगी सलूक ।
 और पाग छबि रूह देख के, होए जात नहीं भूक भूक ॥११॥
 देख सुन्दर सरूप धनीय को, ले हिरदे कर हेत ।
 देख नैन नीके कर, सामी इसारत तोको देत ॥१२॥
 नैन रसीले रंग भरे, भौं भृकुटी बंकी अति जोर ।
 भाल तीखी निकसे फूटके, जो मारत खँच मरोर ॥१३॥
 हँसत सोभित हरवटी, अंग भूखन कई विवेक ।
 मुख बीड़ी सोभित पान की, क्यों बरनों रसना एक ॥१४॥
 लाल रंग मुख अधुर, तंबोल अति सोभाए ।
 ए लालक हक के मुख की, मेरे मुख कही न जाए ॥१५॥
 गौर मुख अति उज्जल, और जोत अतंत ।
 ए क्यों रहे रूह छबि देख के, ऐसी हक सूरत ॥१६॥
 अति उज्जल मुख निलवट, सुन्दर तिलक दिए ।
 अति सोभित है नासिका, सब अंग प्रेम पिए ॥१७॥
 निलवट चौक चारों तरफों, रंग सोभित जोत अपार ।
 निरख निरख नेत्र रूह के, सब अंग होए करार ॥१८॥
 देख निलवट तिलक, मुख भौं भासत अति सुन्दर ।
 सब अंग दृढ़ करके, ले रूह के नैनों अन्दर ॥१९॥

नैन निलवट बंकी छबि, अति चंचल तेज तारे ।
 रंग भीने अति रस भरे, बका निसबत रूह प्यारे ॥२०॥
 ए रस भरे नैन मासूक के, आसिक छोड़े क्यों कर ।
 कई कोट गुन कटाख्य में, रूह छोड़ी न जाए नजर ॥२१॥
 जो देवें पल आड़ी मासूक, तो जानों बीच पड़्यो ब्रह्मांड ।
 रूह अन्तराए सहे ना सरूप की, ए जो दुलहा अर्स अखंड ॥२२॥
 नैन सुख देत जो अलेखे, मीठे मासूक के प्यारे ।
 मेहेर भरे सुख सागर, रूह तर न सके तारे ॥२३॥
 मीठे लगें मरोरते, मीठी पांपण लेत चपल ।
 फिरत अनियारे चातुरी, मान भरे चंचल ॥२४॥
 बीड़ी लेत मुख हाथ सों, सोभित कोमल हाथ मुंदरी ।
 लेत अंगुरियां छबिसों, बलि जाऊं सबे अंगुरी ॥२५॥
 बीड़ी मुख आरोगते, अधुर देखत अति लाल ।
 हँसत हरवटी सोभा सुन्दर, नेत्र मुख मछराल^१ ॥२६॥
 अधवीच आरोगते, वचन केहेत रसाल ।
 नैन बान चलावत सेहेजे, छाती छेद निकसत भाल ॥२७॥
 मोरत पान रंग तंबोल, मानों झलके माहें गाल ।
 जो नैनों भर देखिए, रूह तबहीं बदले हाल ॥२८॥
 मरकलड़े^२ मुख बोलत, गौर हरवटी हँसत ।
 नैन श्रवन निलवट नासिका, मानों अंग सबे मुसकत ॥२९॥
 जोत धरत चित्त चाहती, चित्त चाही नरम लगत ।
 कई रंग करें चित्त चाहती, खुसबोए करत अतंत ॥३०॥
 चित्त चाहे सुख देत हैं, लाल मोती कानन ।
 देख देख जाऊं वारने, ए जो भूखन चेतन ॥३१॥

सुपन सरूप जिन बिध के, पेहेनत हैं भूखन ।
 सो तो अर्स में है नहीं, जो सिनगार करें बिध इन ॥३२॥
 नए सिनगार जो कीजिए, उतारिए पुरातन ।
 नया पुराना पेहेन उतारना, ए होत सुपन के तन ॥३३॥
 ए बारीक बातें अर्स की, सो जानें अरवा अर्स के ।
 नया पुराना घट बढ़, सो कबूं न अर्स में ए ॥३४॥
 अर्स में सदा एक रस, करें पल में कोट सिनगार ।
 चित्त चाहे अंगों सब देखत, नया पेहेन्या न जूना उतार ॥३५॥
 ज्यों अंग त्यों वस्तर भूखन, करें कोट रंग चित्त चाहे ।
 अर्स जूना न कबूं कोई रंग, देखत पल में नित नए ॥३६॥
 देत खुसबोए खुसाली, श्रवनों अति सुन्दर ।
 बात सुनत मेरी रीझत, सुख पावत रूह अन्दर ॥३७॥
 जो अटकों इन अंग में, तो जाए न सकों छोड़ कित ।
 गुझ गुन कई श्रवन के, रूह इतहीं होवे गलित ॥३८॥
 जामा अंग जवेर का, भूखन नंग कई रंग ।
 जोत पोहोंचे आकास में, जाए करत मिनो मिने जंग ॥३९॥
 याही विध जामा पटुका, याही विध पाग वस्तर ।
 करें चित्त चाहे अंग रोसनी, अनेक जोत अंग धर ॥४०॥
 जामा पटुका चोली बांहें की, चीन मोहोरी बन्ध बगल ।
 ए आसिक अंग देख के, आगूं नजर न सके चल ॥४१॥
 चोली अंग को लग रही, हार लटके अंग हलत ।
 तले हार बीच दुगदुगी, नेहेरे लेहेरें जोत चलत ॥४२॥
 बगलों बेली फूल खभे, गिरवान बेली जर ।
 पीछे कटाव जो कोतकी, रूह छोड़ न सके क्योंए कर ॥४३॥

कहें हार हम हैड़े पर, अति बिराजे अंग लाग ।
 सुख देत हक सूरत को, ए कौन हमारो भाग ॥४४॥
 कण्ठ हार नंग सब चेतन, देख सोभा सब चढ़ती देत ।
 ए सुख रूह सो जानहीं, जो सामी हक इसारत लेत ॥४५॥
 ए जंग रूह देख्या चाहे, मिल जोतें जोत लरत ।
 कई नंग रंग अवकास में, मिनों मिने जंग करत ॥४६॥
 जोत अति जवेरन की, बांहों पर बाजू बन्ध ।
 जात चली जोत चीर के, कई विध ऐसी सनन्ध ॥४७॥
 हाथ काड़ों कड़ी पोहोंचियां, जानों ए जोत इनर्थें अतन्त ।
 जोत सागर आकास में, कोई सके ना इत अटकत ॥४८॥
 बाजु बन्ध पोहोंची कड़ी, ए भूखन सोभा अपार ।
 नरम हाथ लीकें हथेलियां, क्यों आवे सोभा सुमार ॥४९॥
 जुदे जुदे रंगों जोत चले, ए जो नंग हाथ मुंदरी ।
 ए तेज लेहेरें कई उठत हैं, ज्यों ज्यों चलवन करें अंगुरी ॥५०॥
 क्यों कहूं जोत नखन की, ए सबर्थें अति जोर ।
 जानों तेज सागर अवकास में, सबको निकसे फोर ॥५१॥
 रंग देखूं के सलूकी, छबि देखूं के नरम उज्जल ।
 जो होए कछुए इस्क, तो इतर्थें न निकसे दिल ॥५२॥
 कैसी नरम अंगुरियां पतली, देख सलूकी तेज ।
 आसमान रोसनी पोहोंचाए के, मानों सूर जिमी भरी रेजा रेज ॥५३॥
 जो जोत समूह सरूप की, सो नैनों में न समाए ।
 जो रूह नैनों में न समावहीं, सो जुबां कह्यो क्यों जाए ॥५४॥
 यों वस्तर भूखन अंग चेतन, सब लेत आसिक जवाब ।
 केहे सब का लेऊं पड़-उत्तर, ए नहीं रूह मिने ख्वाब ॥५५॥

रद बदल भूखन सों, और करे वस्तरों सों ।
 और अंग लग जाए ना सके, फारग^१ न होए इनमों ॥५६॥
 ए वस्तर भूखन हक के, सो सारे ही चेतन ।
 सब जवाब लिया चाहिए, आसिक एही लछन ॥५७॥
 आसिक रूह जित अटकी, अंग भूखन या वस्तर ।
 यासों लगी गुफ्तगोए^२ में, सो छूटे नहीं क्यों कर ॥५८॥
 इस्क बसे सब अंग में, सब बिध देत हैं सुख ।
 कई सुख हर एक अंग में, सो कह्यो न जाए या मुख ॥५९॥
 प्रेम लिए सोभा गुन, सब सुख देत पूरन ।
 या वस्तर या भूखन, सुख जाहेर या बातन ॥६०॥
 सुख इस्क हक जात के, तिनसे अंग सुखदाए ।
 बाहेर सुख सब अंग में, ए सुख जुबां कह्यो न जाए ॥६१॥
 अंग वस्तर या भूखन, सब सुख दिया चाहे ।
 कई सुख जाहेर कई बातन, सब मिल प्रेम पिलाए ॥६२॥
 इस्क देवें लेवें इस्क, और ऊपर देखावें इस्क ।
 अर्स इस्क जरे जरा, ए जो सूरत इस्क अंग हक ॥६३॥
 एक अंग जिन देख्या होए, सो पल रहे न देखे बिगर ।
 हुई बेसकी इन सख्य की, रूह अंग न्यारी रहे क्यों कर ॥६४॥
 सब अंग दिल में आवते, बेसक आवत सूरत ।
 हाए हाए रूह रहेत इत क्यों कर, आए बेसक ए निसबत ॥६५॥
 चारों जोड़े चरन के, ए जो अर्स भूखन ।
 ए लिए हिरदे मिने, आवत सख्य पूरन ॥६६॥
 जो सोभावत इन चरन को, ए भूखन सब चेतन ।
 अनेक गुन याके जाहेर, और अलेखे बातन ॥६७॥

नंग नरम जोत अतंत, और अतंत खुसबोए ।
 ए भूखन चरनों सोभित, बानी चित्त चाही बोलत सोए ॥६८॥
 गौर चरन अति सोभित, और सिनगार भूखन सोभित ।
 ए अंग संग न्यारे न कबहूं, अति बारीक समझन इत ॥६९॥
 एही ठौर आसिकन की, अर्स की जो अरवाहें ।
 सो चरन तली छोड़ें नहीं, पड़ी रहें तले पाए ॥७०॥
 अर्स रूहें आसिक इनकी, जिन पायो पूरन दाव ।
 ठौर ना और रूहन को, जाको लगे कलेजे घाव ॥७१॥
 कई रंग नंग वस्तर भूखन, चढ़ी आकास जोत लेहेर ।
 जो जोत नख चरन की, मानों चीर निकसी नेहेर ॥७२॥
 केहेती हों इन जुबांन सों, और सुपन श्रवन नजर ।
 जो नजरों सूरज ख्वाब के, सो सिफत पोहोंचे क्यों कर ॥७३॥
 कट चीन झलके दावन, बैठ गई अंग पर ।
 कई रंग नंग इजार में, सो आवत जाहेर नजर ॥७४॥
 और भूखन जो चरन के, सो अति धरत हैं जोत ।
 नरम खुसबोए स्वर माधुरी, आसमान जिमी उद्योत ॥७५॥
 पांउं तली नरम उज्जल, लीकें एड़ी लांक लाल ।
 ए रूह आसिक से क्यों छूटहीं, ए कदम नूर जमाल ॥७६॥
 तली हथेली हाथ पांउं की, लाल अति उज्जल ।
 और बीसों अंगुरियां नरम पतली, नख नरम निरमल ॥७७॥
 काड़े कोमल हाथ पांउं के, फने पीड़ी अंग माफक ।
 उज्जल अति सोभा लिए, ए सूरत सोभा नित हक ॥७८॥
 रंग रस इंद्री नौतन, चढ़ता अंग नौतन ।
 तेज जोत सोभा नौतन, नौतन चढ़ता जोवन ॥७९॥

छब फब मुख सनकूल, चढ़ती कला देखाए ।
 कायम अंग अर्स के, सब चढ़ता नजरों आए ॥८०॥
 ए अंग सब अर्स के, अर्स वस्तर भूखन ।
 अर्स जरे जवेर को, सिफत न पोहोंचे सुकन ॥८१॥
 सब अंग इस्क के, गुन अंग इन्द्री इस्क ।
 सब्द न पोहोंचे सिफत, इन बिध सूरत हक ॥८२॥
 केहे केहे दिल जो केहेत है, तार्थें अधिक अधिक अधिक ।
 सोभा इस्क बका तन की, ए मैं केहे न सकों रंचक ॥८३॥
 अब लग जानती अर्स के, हेम नंग लेत मिलाए ।
 पैदास भूखन इन विध, वे पेहेनत हैं चित्त चाहे ॥८४॥
 एक ले दूजा मिलावहीं, तब तो घट बढ़ होए ।
 सो तो अर्स में हैं नहीं, वाहेदत में नहीं दोए ॥८५॥
 घड़े जड़े ना समारे, ना सांध मिलाई किन ।
 दिल चाहे नंगों के असल, वस्तर या भूखन ॥८६॥
 ना पेहेन्या ना उतारिया, दिल चाह्या सब होत ।
 जब जित जैसा चाहिए, सो उत आगूं बन्या ले जोत ॥८७॥
 जो रूह कहावे अर्स की, माहें बका खिलवत ।
 सो जिन खिन छोड़े सरूप को, कहे उमत को महामत ॥८८॥
 ॥प्रकरण॥१०॥चौपाई॥८८७॥

श्री सुन्दर साथ को सिनगार

सुन्दर साथ बैठा अचरज सों, जानों एकै अंग हिल मिल ।
 अंग अंग सब के मिल रहे, सब सोभित हैं एक दिल ॥१॥
 जानो मूल मेला सब एक मुख, सब एक सोभित सिनगार ।
 सागर भर्या सब एक रस, माहें कई बिध तरंग अपार ॥२॥

निलवट बेना^१ चांदलो, हरी गरदन मुख मोर ।
 नैन चोंच सिर सोभित, बीच बने तरफ दोऊ जोर ॥३॥
 निरमल मोती नासिका, कई बिध नथ बेसर ।
 जोत जोर नंग मिहीं नकस, ए बरनन होए क्यों कर ॥४॥
 सोभित हैं सबन के, कानन झलकत झाल^२ ।
 माहें मोती नंग निरमल, झाई उठत माहें गाल ॥५॥
 चार चार हार सबन के, उर पर अति झलकत ।
 कण्ठ सरी कण्ठन में, सबन के सोभित ॥६॥
 एक हार हीरन का, दूजा हेम कंचन ।
 तीजो हार मानिक को, चौथा हार मोतियन ॥७॥
 कहूं डोरे कहूं बादले, कहूं खजूरे हार ।
 कहा कहूं जवेर अर्स के, झलकारों झलकार ॥८॥
 हाथ चूड़ी नंग नवघरी, अंगूठिएं झलकत नंग ।
 उज्जल हाथ हथेलियां, पोहोंचों पोहोंची नंग कई रंग ॥९॥
 जैसे सस्व अर्स के, भूखन तिन माफक ।
 याही रवेस^३ वस्तर जवेर के, ए अंग बड़ी रूह हक ॥१०॥
 जैसी सोभा भूखन की, कहूं तैसी सोभा वस्तर ।
 कछू पाइए सोभा सस्व की, जो खोले रूह नजर ॥११॥
 वस्तरों के नंग क्यों कहूं, कई जवेरों जोत ।
 सबे भई एक रोसनी, जानों गंज अंबार उद्योत ॥१२॥
 अतन्त नंग अर्स के, और नरम जवेर अतन्त ।
 अतन्त अर्स रसायन, खूबी खुसबोए अति बेहेकत ॥१३॥
 कहूं केते नाम जवेरन के, रसायन नाम अनेक ।
 कई नाम भूखन एक अंग, सो कहां लग कहूं विवेक ॥१४॥

सूरत सकल साथ की, मुख कोमल सुन्दर गौर ।
 ए छवि हिरदे तो फबे, जो होवे अर्स सहूर ॥१५॥
 रूहे सुन्दर सनकूल^१ मुख, नहीं सोभा को पार ।
 घट बढ़ कोई न इनमें, एक रस सब नार ॥१६॥
 कई रंग सोभित साड़ियां, रंग रंग में कई नंग सार ।
 भिन्न भिन्न झलके एक जोत, कई किरनें उठें बेसुमार ॥१७॥
 हर एक के सिनगार, तिन सिनगार सिनगार कई नंग ।
 नंग नंग में कई रंग हैं, तिन रंग रंग कई तरंग ॥१८॥
 तरंग तरंग कई किरनें, कई रंग नंग किरनें न समाए ।
 यों जोत सागर सरूपों को, रह्यो तेज पुन्ज जमाए ॥१९॥
 अब इनके अंग की क्यों कहूं, ठौर नहीं बोलन ।
 क्यों कहूं सोभा अखण्ड की, बीच बैठ के अंग सुपन ॥२०॥
 रंग तरंग किरने कही, कही तेज जोत जुबां इन ।
 प्रकास उद्योत सब सब्द में, जो कह्या नूर रोसन ॥२१॥
 ज्यों ज्यों बैठियां लग लग, त्यों त्यों अरस-परस सुख देत ।
 बीच कछू ना रहे सके, यों खैंच खैंच ढिग लेत ॥२२॥
 जानों सागर सब एक जोत में, नूर रोसन भर पूरन ।
 झाँई झलके तेज दरियाव ज्यों, कई उठे तरंग भिन्न भिन्न^२ ॥२३॥
 ऊपर तले की रोसनी, और वस्तर भूखन की जोत ।
 और जोत सरूपों की क्यों कहूं, ए जो ठौर ठौर उद्योत^३ ॥२४॥
 ऊपर तले थम्भ दिवालों, सब जोत रही भराए ।
 बीच समूह जोत साथ की, बनी जुगल जोत बीच ताए ॥२५॥
 ए जोत में सोभा सुन्दर, और सरूपों की सुखदाए ।
 देख देख के देखिए, ज्यों नख सिख रहे भराए ॥२६॥

ज्यों दरिया तेज जोत का, त्यों सब दिल दरिया एक ।
 एक रस एक रोसनी, जुबां क्यों कर कहे विवेक ॥२७॥
 जोत उपली कही जुबांन सों, पर रहेस चरित्र सुख चैन ।
 सुख परआतम तब पाइए, जब खुलें अन्तर के नैन ॥२८॥
 एक रस होइए इस्क सों, चलें प्रेम रस पूर ।
 फेर फेर प्याले लेत हैं, स्याम स्यामाजी हजूर ॥२९॥
 क्यों कहूं सुख सबन के, सब अंगों के एक चित्त ।
 अरस-परस सुख लेवहीं, अंग नए नए उपजत ॥३०॥
 साथ समूह की क्यों कहूं, जाको इस्कै में आराम ।
 अरस-परस सब एक रस, पिउ विलसत प्रेम काम ॥३१॥
 इन धाम के जो धनी, तिन अंगों का सनेह ।
 हेत चित्त आनन्द इनका, क्यों कहूं जुबां इन देह ॥३२॥
 सुख अन्तर अन्तस्करन के, आवें नहीं जुबांन ।
 प्रेम प्रीत रीत अन्तर की, सो क्यों कर होए बयान ॥३३॥
 सत सरूप जो धाम के, तिनके अन्तस्करन ।
 इस्क तिनके अंग का, सो कछुक करूं बरनन ॥३४॥
 नख सिख अंग इस्क के, इस्कै संधों संध ।
 रोम रोम सब इस्क, क्यों कर कहूं सनंध ॥३५॥
 अन्तस्करन इस्क के, इस्कै चित्त चितवन ।
 बातां करें इस्क की, कछू देखें ना इस्क बिन ॥३६॥
 तत्व गुन अंग इंद्रियां, सब इस्कै के भीगल ।
 पख सारे इस्क के, सब इस्क रहे हिल मिल ॥३७॥
 ए सुख संग सरूप के, जो अन्तर अंदर इस्क ।
 आतम अन्तस्करन विचारिए, तो कछू बोए आवे रंचक ॥३८॥

जो कोई आतम धाम की, इत हुई होए जाग्रत ।
 अंग आया होए इस्क, तो कछू बोए आवे इत ॥३९॥
 पिउ नेत्रों नेत्र मिलाइए, ज्यों उपजे आनन्द अति घन ।
 तो प्रेम रसायन पीजिए, जो आतम थें उतपन ॥४०॥
 आतम अन्तस्करन विचारिए, अपने अनुभव का जो सुख ।
 बढ़त बढ़त प्रेम आवहीं, परआतम सनमुख ॥४१॥
 इतथें नजर न फेरिए, पलक न दीजे नैन ।
 नीके सरूप जो निरखिए, ज्यों आतम होए सुख चैन ॥४२॥
 तब प्रेम जो उपजे, रस परआतम पोहोंचाए ।
 तब नैन की सैन कछू होवहीं, अन्तर आंखां खुल जाए ॥४३॥
 अन्तस्करन आतम के, जब ए रह्यो समाए ।
 तब आतम परआतम के, रहे न कछू अन्तराए ॥४४॥
 परआतम के अन्तस्करन, पेहेले उपजत है जे ।
 पीछे इन आतम के, आवत है सुख ए ॥४५॥
 ताथें हिरदे आतम के लीजिए, बीच साथ सरूप जुगल ।
 सुरत न दीजे टूटने, फेर फेर जाइए बल बल ॥४६॥
 सोभा मुखारबिन्द की, क्यों कर कहूं तेज जोत ।
 रस भर्यो रसीलो दुलहा, जामें नित नई कला उद्योत ॥४७॥
 कमी जो कछुए होवहीं, तो कहिए कला अधिकाए ।
 ए तो बड़े तरंग रंग रस के, यों प्रेमे देत देखाए ॥४८॥
 बल बल सोभा सरूप की, बल बल वस्तर भूखन ।
 बल बल मीठी मुसकनी, बल बल जाऊं खिन खिन ॥४९॥
 बल बल बंकी पाग के, बल बल बंके नैन ।
 बल बल बंके मरोरत, बल बल चातुरी चैन ॥५०॥

बल बल तिरछी चितवनी, बल बल तिरछी चाल ।
 बल बल तिरछे वचन के, जिन किया मेरा तिरछा हाल ॥५१॥
 बल बल छबीली छब पर, दंत तंबोल मुख लाल ।
 बल बल आठों जाम की, बल बल रंग रसाल ॥५२॥
 बल बल मीठे मुख के, अंग अंग अमी रस लेत ।
 कई विध के सुख देत हैं, पल पल में कर हेत ॥५३॥
 बल बल जाऊं चरन के, बल बल हस्त कमल ।
 बल बल नख सिख सब अंगों, बल बल जाऊं पल पल ॥५४॥
 बल बल पियाजी के प्रेम पर, बल बल चितवन हेत ।
 महामत बल बल सबों अंगों, फेर फेर वारने लेत ॥५५॥
 ॥प्रकरण॥११॥चौपाई॥९४२॥

सागर पांचमा इस्क का

पांचमा सागर पूरन, गेहेरा गुझ गंभीर ।
 प्याले इस्क दरियाव के, पीवें अर्स रूहें फकीर ॥१॥
 इन रस को ए सागर, पूरन जुगल किसोर ।
 ए दरिया सुख पांचमा, लेहेरी आवत अति जोर ॥२॥
 अति सुख बड़ी रूह को, इस्क तरंग अतंत ।
 मुख मीठी अपनी रूह को, रस रसना पिलावत ॥३॥
 हेत कर इन रूहन की, प्यार सों बात सुनत ।
 सो वचन अन्दर लेय के, मुख सामी बान बोलत ॥४॥
 नैनों नैन मिलाए के, अमीरस सींचत ।
 अपने अंग रूहें जान के, नेह नए नए उपजावत ॥५॥
 सुख केते कहूं स्यामाजीय के, हक सुख बिना हिसाब ।
 ए सुख सोई जानहीं, जो पिए इन साकी सराब ॥६॥

रस भरी अति रसना, अति मीठी वल्लभ बान ।
 ए सुख कह्यो न जावहीं, जो सुख देत जुबांन ॥७॥
 कई सुख मीठी बान के, हक देत कर प्यार ।
 ज्यों मासूक देत आसिक को, एक तन यार को यार ॥८॥
 नैन रसीले रंग भरे, प्रेम प्रीत भीगल ।
 देत हैं जब हेत सुख, चुभ रहेत रूह के दिल ॥९॥
 इस्क प्याला रंग रस का, जब देत नैन मरोर ।
 फूल पोहोंचे तालू रूह के, कायम चढ़ाव होत जोर ॥१०॥
 कई सुख अंग सरूप के, कई सुख रंग रसाल ।
 कई सुख मीठी जुबांन के, कै प्याले देत रस लाल ॥११॥
 कई सुख अमृत सींचत, ज्यों रोप सींचत बनमाली ।
 इन बिध नैनों सींचत, रूह क्यों न लेवे गुलाली ॥१२॥
 जो कछू बोले रूह मुखथें, सो नीके सुने हक कान ।
 ऐसा मीठा जवाब तोहे देवहीं, कोई न सुख इन समान ॥१३॥
 अरस-परस सुख देवहीं, नाहीं इन सुख को पार ।
 ए रस इस्क सागर को, अर्स रूहें पीवें बारंबार ॥१४॥
 ए सुख सागर पांचमा, इस्क सागर दिल हक ।
 पेहेले चार देखें सागर, कोई ना हक दिल माफक ॥१५॥
 हकें तोहे खेल देखाइया, बेवरा वास्ते इस्क ।
 क्यों न देखो पट खोल के, नजर खोली है हक ॥१६॥
 इन ठौर बैठे देखाइया, साहेबी हक बुजरक ।
 पैठ हक दिल बीच में, पी प्याले इस्क ॥१७॥
 तो हकें कह्या अर्स अपना, इस्क दिल मोमिन ।
 सो इस्क करे जाहेर, दिल पैठ हक के तन ॥१८॥

इस्क गुझ दिल हक का, सो करे जाहेर माहें खिलवत ।
 सो खिलवत ल्याए इत आसिक, करी इस्कें जाहेर न्यामत ॥१९॥
 इत दुनियां चौदे तबक में, एक दम उठत है जे ।
 जो हक सहूर कर देखिए, तो सब वास्ते इस्क के ॥२०॥
 ए इस्क सब हक का, अर्स हादी रूहों सों ।
 ए अर्स दिल जाने मोमिन, जो हक की वाहेदत मों ॥२१॥
 ए किया एतेही वास्ते, तुमारे दिल उपजाया एह ।
 ए खेल में देखे जुदे होए, लेने मेरा इस्क सनेह ॥२२॥
 ए इस्क सागर अपार है, वार न पाइए पार ।
 ए लेहेरी इस्क सागर की, हक देवें सोहागिन नार ॥२३॥
 जो हक तोहे अन्तर खोलावहीं, तो आवे हक लज्जत ।
 और बड़े सुख कई अर्स के, पर ए निपट बड़ी न्यामत ॥२४॥
 लेहेरी इस्क सागर की, जो तूं लेवे रूह इत ।
 तो तूं देखे सुख इस्क के, ए होए ना बिना निसबत ॥२५॥
 और सुख इन लेहेरन को, आवत खिलवत याद ।
 इन हक इस्क सागर की, कई नेहेरें सुख स्वाद ॥२६॥
 यों सुख इस्क सागर को, धनी प्यारें देत रूहन ।
 सो इत देखाए मेहेर कर, जो इस्कें किए रोसन ॥२७॥
 जो सुख इस्क सागर को, माहें हेत प्रीत तरंग ।
 ए जो अर्स अरवाहों को, आए खिलवत के रस रंग ॥२८॥
 जो हक तोहे देवें हिंमत, तो रूह तूं पी सराब ।
 ए कायम मस्ती अर्स की, जो साकी पिलावे आब ॥२९॥
 सुख हक इस्क के, जिनको नाहीं सुमार ।
 सो देखन की ठौर इत है, जो रूह सों करो विचार ॥३०॥

जेते सुख इस्क के, लेते अर्स के माहें ।
 सो देखन की ठौर एह है, और ऐसा न देख्या क्याहें ॥३१॥
 कबू अर्स में न होए जुदागी, ना जुदागी ए न्यामत ।
 ए बातें दोऊ अनहोनिया, सो हक हम वास्ते करत ॥३२॥
 इस्क पाइए जुदागिएं, सो तुम पाई इत ।
 वतन हकीकत सब दर्ई, ऐसा दाव न पाइए कित ॥३३॥
 फेर कब जुदागी पाओगे, छोड़ के हक अर्स ।
 बैठे खेल में पिओगें, हक इस्क का रस ॥३४॥
 याद करो इस्क को, कायम अर्स में लेते जो सुख ।
 अलेखे अनगिनती, सो देत लज्जत माहें दुख ॥३५॥
 जो सहूर करो तुम दिल से, खेल में किए बेसक ।
 तो फुरसत न पाओ दम की, सुख इस्क गिनती हक ॥३६॥
 ए किया तुमारे वास्ते, जो धनी खोले नजर एह ।
 तो कई देखो माहें बातून, हक का प्रेम सनेह ॥३७॥
 ए नजर तुमें तब खुले, जो पूरन करें हक मेहेर ।
 तो एक हक के इस्क बिना, और देखो सब जेहेर ॥३८॥
 हकें मेहेर बिध बिध करी, पर किन किन खोली न नजर ।
 सो भी वास्ते इस्क के, करसी बातें हाँसी कर ॥३९॥
 खेल बनत याही बिध, एक भागे एक लरे ।
 इनकी हाँसी बड़ी होएसी, जब घरों बैठ बातां करे ॥४०॥
 ए खेल सोई हाँसी सोई, और सोई हक का इस्क ।
 सो सब वास्ते हाँसीय के, जो इत तुमें किए बेसक ॥४१॥
 जो देखे इत आंखां खोल के, तो देखे हक का इस्क अपार ।
 सोई हाँसी देखे आप पर, तो क्यों कहूं औरों सुमार ॥४२॥

मैं बोहोत हाँसी देखी आप पर, अनगिनती हक इस्क ।
 इलम धनी के देखाइया, मैं दोऊ देखे बेसक ॥४३॥
 मोको धनिँ देखाइया, सब इस्क चौदे तबक ।
 इत जरा न बिना इस्क, अपना ऐसा देखाया हक ॥४४॥
 जो जागो सो देखियो, मेरी तो निसां^१ भई ।
 रूह देखे सो दिल लग न आवहीं, तो क्यों सके जुबां कही ॥४५॥
 ए तो केहेती हों खेल का, और कहा कहूं अर्स की इत ।
 अर्स का इस्क तो कहों, जो ठौर जरे की पाऊं कित ॥४६॥
 मोमिन होए सो समझियो, ए बीतक कहे महामत ।
 अब बात न रही बोलन की, कह्या चलते जान निसबत ॥४७॥
 ॥प्रकरण॥१२॥चौपाई॥९८९॥

सागर छठा खुदाई इलम का

सागर छठा है अति बड़ा, जो खुदाई इलम ।
 जरा सक इनमें नहीं, जिनमें हक हुकम ॥१॥
 जेता तले हुकम के, ए जो कादर की कुदरत ।
 ए सब बेसक तोलिया, सक न पाइए कित ॥२॥
 आसमान जिमी के बीच में, बेसक हुता न कोए ।
 जब लग सक दुनियां मिने, तो कायम क्यों कर होए ॥३॥
 अव्वल से आखिर लग, इत जरा न कहूं सक ।
 रूहअल्ला के इलम से, हुए कायम चौदे तबक ॥४॥
 इस्क काहूं ना हुता, तो नाम आसिक कह्या हक ।
 सो बल इन कुंजीय के, पाया इस्क चौदे तबक ॥५॥
 ए दुनियां पैदा किन करी, हुती न काहूं खबर ।
 सो सक मेटी सबन की, इलम खुदाई आखिर ॥६॥

वेद और कतेब में, कहूं सुध न हुती मुतलक ।
 खोल हकीकत मारफत, किन काढी न सुभे सक ॥७॥
 बड़े सात निसान आखिर के, जासों पाइए कयामत ।
 खिताब हादी जाहेर कर, दर्ई सबों को नसीहत ॥८॥
 आजूज^१ माजूज^२ लेसी सबों, ऊगे सूरज मगरब ।
 ईसा मारे दज्जाल को, एक दीन करसी सब ॥९॥
 दाभा^३ होसी जाहेर, मेंहेदी मोमिनों इमामत ।
 उड़ावे सूर असराफील, बेसक पाया बखत ॥१०॥
 काफर और मुनाफक, हँसते थे महंमद पर ।
 सोई दिन अब आए मिल्या, जो महंमदें कही थी आखिर ॥११॥
 बसरी मलकी और हकी, कही महंमद तीन सूरत ।
 करें सिफायत^४ आखिर, खासल खास उमत ॥१२॥
 करम-कांड और सरीयत, किन किन लई तरीकत ।
 दुनियां चौदे तबक में, किन खोली ना हकीकत ॥१३॥
 नासूत मलकूत लाए की, ना सुध थी जबरूत ।
 नाम पढ़े जानत हैं, कहें बका लाहूत ॥१४॥
 ए सुध न पाई काहूं ने, क्यों है कहां ठौर विध किन ।
 खोज खोज चौदे तबक का, दिल हुआ न किन रोसन ॥१५॥
 सो इलम खुदाई लदुन्नी, पोहोंच्या चौदे तबक ।
 सो इतथें मेहेर पसरी, सबे हुए बेसक ॥१६॥
 अव्वल कह्या फुरमान^५ में, इत काजी होसी हक ।
 करसी कायम सबन को, ऐसी मेहेर होसी मुतलक^६ ॥१७॥
 ए खेल किया किन वास्ते, और हुआ किनके हुकम ।
 ए सुध काहूं ना परी, कहां अर्स बका खसम ॥१८॥

गिरो रूहें फरिस्ते लैल^१ में, किन वास्ते आए उतर ।
 कुंन केहेते खेल पैदा किया, ए किनने किन खातिर ॥१९॥
 किन कौल किया बीच अर्स के, अरवाहें जो मोमिन ।
 सो पढ़े वेद कतेब को, ए खोली ना हकीकत किन ॥२०॥
 ए इलमें सब विध समझे, सांचा इलम जो हक ।
 सब मर मर जाते हुते, किए इलमें बका मुतलक ॥२१॥
 क्यों सदर-तुल-मुन्तहा, क्यों है अर्स अजीम ।
 क्यों कौल फैल हकके, क्यों हक सूरत हलीम^२ ॥२२॥
 क्यों अर्स आगूं जोए^३ है, क्यों अर्स ढिग है ताल ।
 क्यों पसु पंखी अर्स के, क्यों बाग लाल गुलाल ॥२३॥
 क्यों खासल खास उमत, बीच नूरतजल्ला जे ।
 क्यों खास उमत दूसरी, जो कही बीच नूर के ॥२४॥
 ए नाम निसान सब लिखे, खुसबोए जिमी उज्जल ।
 और कह्या पानी दूध सा, ताल जोए का जल ॥२५॥
 जोए किनारे जरी द्योहरी, पूर जवेर दरखत ।
 ए नाम निसान सबे लिखे, पर कोई पावे ना हकीकत ॥२६॥
 नेक नेक निसान केहेत हों, वास्ते साहेदी महंमद ।
 ए पट खुल्या नूर पार का, कहीं कहां लग कहूं न हद ॥२७॥
 इलम खुदाई लदुन्नी, रूह अल्ला ल्याए इत ।
 उमियों^४ पट खोल बका मिने, बैठाए कर निसबत ॥२८॥
 ए बल इन कुंजीय का, काहूं हुता न एते दिन ।
 रूहअल्ला पैगाम उमत को, द्वार खोल्या बका वतन ॥२९॥
 ए कायम अर्स अपार है, जो कहावत है वाहेदत ।
 कोई पोहोंचे न अर्स रूहों बिना, जिनकी ए निसबत ॥३०॥

ए बल देखो कुंजीय का, जिन बेवरा किया बेसक ।
 ए भी बेवरा देखाइया, जो गैब^१ खिलवत का इस्क ॥३१॥
 ए बल देखो कुंजी का, जिन देखाई निसबत ।
 ए जो रूहें जात हक की, जिन बेसक देखी वाहेदत^२ ॥३२॥
 ए बल देखो कुंजीय का, खूब देखी हक सूरत ।
 हक के दिल के भेद जो, सो इलमें देखी मारफत^३ ॥३३॥
 कहा कहूं बल कुंजीय का, रूहें बड़ी रूह निसबत ।
 और हक बड़ी रूह रूहन की, इन इलमें देखी खिलवत ॥३४॥
 ए बल देखो कुंजीय का, नीके देख्या हक इस्क ।
 जुदे बैठाए लिखी इसारतें, जासों समझे रूह बेसक ॥३५॥
 ए बल देखो इन कुंजीय का, बातें छिपी हक दिल की ।
 सो सब समझी जात हैं, हैं अर्स की गुझ जेती ॥३६॥
 देखो बल इन कुंजीय का, ए जो लिखी रमूजें हक ।
 आखिर रसूल होए आवहीं, दे इलम खोलावें बेसक ॥३७॥
 ए बल देखो कुंजीय का, रूहें बैठाई जुदी कर ।
 आप केहे संदेसे कहावहीं, आप ल्यावें जुदे नाम धर ॥३८॥
 बल क्यों कहूं इन कुंजीय का, जो हक दिल गुझ इस्क ।
 तिन दरियाव की नेहेरें, उतरी नासूत में बेसक ॥३९॥
 बल कहा कहूं कुंजीय का, ए जो झूठा खेल रंचक ।
 सो रूहों सांच कर देखाइया, बन्ध बांधे कई बुजरक ॥४०॥
 ए बल देखो कुंजीय का, रूहें बीच चौदे तबक के आए ।
 सो इलमें देखाया झूठ कर, बीच अर्स के बैठाए ॥४१॥
 इन हक का इस्क दुनी मिने, न पाइए लदुन्नी बिन ।
 बिना इस्क न इलम आवहीं, दोऊ तौले अरस परस बजन ॥४२॥

ए कुंजी बल अपार है, जिनसों पाया अपार ।
 लिया हक दिल गुझ इस्क, जिनको काहूं न सुमार ॥४३॥
 ए इलम कुंजी अर्स की, रूह अल्ला ल्याए हकपें ।
 माहें कई गुझ हक दिल की, सो सब देखी इन कुंजी सें ॥४४॥
 आसमान जिमी के बीच में, बातें बिना हिसाब ।
 तिनमें बातें जो हक की, सो लिखी मिने किताब ॥४५॥
 या जाहेर या बातून, रमूजें या इसारत ।
 सो खोल्या सब इन कुंजिएं, हकीकत या मारफत ॥४६॥
 अव्वल से आखिर लग, किया कुंजिएं सब का काम ।
 हैयाती चौदे तबकों, दर्ई कायम भिस्त तमाम ॥४७॥
 कहूं दुनियां चौदे तबक में, कह्या न हक का एक हरफ ।
 तो हक सूरत क्यों केहेवहीं, किन पाई न बका तरफ ॥४८॥
 तिन हक के दिल का गुझ जो, सो कुंजिएं खोल्या इन ।
 तो बात दुनी की इत कहां रही, कुंजी ऐसी नूर रोसन ॥४९॥
 सदर-तुल-मुंतहा अर्स अजीम, जबरूत या लाहूत ।
 इत जरा सक कहूं ना रही, ए बल कुंजी कूवत^१ ॥५०॥
 अर्स अजीम के बाग जो, हौज जोए जानवर ।
 इत सक जरा न काहू में, मोहोलात या अन्दर ॥५१॥
 इन अर्सों की भी क्या कहूं, इन कुंजी अतन्त बूझ ।
 और बात इत कहां रही, काढ़्या हक के दिल का गुझ ॥५२॥
 महामत कहे ए मोमिनो, ए ऐसी कुंजी इलम ।
 ए मेहेर देखो मेहेबूब की, तुमको पढ़ाए आप खसम ॥५३॥

॥प्रकरण॥१३॥चौपाई॥१०४२॥

सागर सातमा निसबत का

अब कहूं दरिया सातमा, जो निसबत^१ भरपूर ।
 याको वार न पार काहूं, जो नूर के नूर को नूर ॥१॥
 बेसुमार ल्याए सुमार में, ए जो करत हों मजकूर^२ ।
 क्यों आवे बीच हिसाब के, जो हक अंग सदा हजूर ॥२॥
 खूबी क्यों कहूं निसबत की, वास्ते निसबत खुली हकीकत ।
 तो पाई हक मारफत, जो थी हक निसबत ॥३॥
 निसबत असल सबन की, जित निसबत तित सब ।
 सब निसबत के वास्ते, इलमें जाहेर किए अब ॥४॥
 निसबत हक की जात है, निसबत में इस्क ।
 निसबत वास्ते इलम, इत आया बेसक ॥५॥
 ए हकें किया इस्क सों, कई बंध बांधे जहूर ।
 सो जानत हैं निसबती, जो खिलवत हुई मजकूर ॥६॥
 हकें निसबत वास्ते, कई बंध बांधे माहें खेल ।
 सब सुख देने निसबत को, तीन बेर आए माहें लैल^३ ॥७॥
 अव्वल देखाया लैल में, निसबत जान इस्क ।
 दूसरी बेर देखाइया, गुझ इस्क मुतलक ॥८॥
 वास्ते निसबत बेर तीसरी, खेल देखाया हक ।
 इलम बड़ाई इस्क, देख्या गुझ बका का बेसक ॥९॥
 निसबत वास्ते इस्क, निसबत वास्ते इलम ।
 खुसाली निसबत वास्ते, आखिर ल्याए खसम ॥१०॥
 ए इलम अन्दर यों केहेत है, ए जो निसबत देखत दुख ।
 इन दुख में बका अर्स के, हैं हक दिल के कई सुख ॥११॥

ए सुख सागर निसबत का, तिनका सुमार न आवे क्याहें ।
 सब हकें मपाए सागर, पर निसबत तौल कोई नाहें ॥१२॥
 मापे गेहेरे सागर, जिनको थाह^१ न देखे कोए ।
 तिन हक दिल अन्दर पैठ के, मापे इस्क सागर सोए ॥१३॥
 जो हक काहूं न पाइया, ना किन सुनिया कान ।
 पाया न वा के अर्स को, जो कौन ठौर मकान ॥१४॥
 सब बुजरकों ढूंढ्या, किन पाई न बका तरफ ।
 दुनियां चौदे तबक में, किन कह्या न एक हरफ ॥१५॥
 तिन हक दिल अन्दर पैठ के, माप्या सागर इस्क ।
 इन हक के इलमें रोसनी, सब मापे सागर बेसक ॥१६॥
 सो इस्क इलम सुख सागर, वास्ते आए निसबत ।
 इन निसबत के तौल कोई, ल्याऊं कहां से हक न्यामत ॥१७॥
 ए निसबत जो सागर, जानें निसबती मोमिन ।
 कहूं थाह न गेहेरा सागर, कोई पावे न निसबत बिन ॥१८॥
 तो क्यों कहूं जोड़ निसबत की, जो दीजे निसबत मान ।
 निसबत हक की जात हैं, जो हक वाहेदत सुभान ॥१९॥
 बोहोत लेहेरी इन सागर की, मेहेर इस्क इलम ।
 सोभा तेज सुख कई बका, इन निसबत में जात खसम ॥२०॥
 एह इलम ए इस्क, और निसबत कही जो ए ।
 ए तीनों सिफत माहें मोमिनो, निसबत हक की जे ॥२१॥
 किन पाया न इन इलम को, किन पाया ना ए इस्क ।
 तो क्यों पावे ए निसबत, पेहेलें सूरत न पाई हक ॥२२॥
 ए गुझ भेद हक रूहन के, हक दिल की भी और ।
 ए जानें हक निसबती, जाको हक कदम तले ठौर ॥२३॥

जब देखों हक निसबत, तब एकै हक निसबत ।
 और हक का हुकम, कछू ना हुकम बिना कित ॥२४॥
 जो कोई हक के हुकम का, ताए जो इलम करे बेसक ।
 लेवे अपनी मेहेर में, तो नेक दीदार कबूं हक ॥२५॥
 पर कबूं दीदार ना निसबत का, ना काहूं को एह न्यामत ।
 ए जुबां इन निसबत की, कहा करसी सिफत ॥२६॥
 ए जो सख्य निसबत के, काहूं न देवें देखाए ।
 बदले आप देखावत, प्यारी निसबत रखें छिपाए ॥२७॥
 निमूना इन निसबत का, कोई नहीं इन समान ।
 ज्यों निमूना दूसरा, दिया न जाए सुभान ॥२८॥
 क्यों दीजे निमूना इन का, जो कही हक की जात ।
 निसबत इस्क इलम, ज्यों बिरिख फल फूल पात ॥२९॥
 सब लगे हैं निसबत को, इस्क इलम हुकम ।
 ना तो कैसे इत जाहेर होंए, हम तुम इस्क इलम ॥३०॥
 ए सब निसबत वास्ते, जो कछू सब्द उठत ।
 ए जो नजरों देखत, या जो कानों सुनत ॥३१॥
 ज्यों हाथ पांउं सूरत के, मुख नेत्र नासिका कान ।
 त्यों सब मिल एक सूरत, यों वाहेदत अंग सुभान ॥३२॥
 अब कहा कहूं निसबत की, दिया न निमूना जात ।
 और सब्द ना इन ऊपर, अब कहा कहूं मुख बात ॥३३॥
 सिफत अलेखे निसबत, ज्यों सिफत अलेखे हक ।
 सब्दातीत न आवे सब्द में, मैं कही इन बुध माफक ॥३४॥
 कहिए सारी उमर लग, तो सिफत न आवे सुमार ।
 ए दरिया निसबत का, याकी लेहेरें अखंड अपार ॥३५॥

ए बात बड़ी हक निसबत, सो झूठे खेल में नाहें ।
 ए बात होत बका मिने, हक खिलवत के माहें ॥३६॥
 जो खेल में खबर ना हक की, तो निसबत खबर क्यों होए ।
 हक आसिक निसबत मासूक, वाहेदत में ना दोए ॥३७॥
 ए बात सुने जो खेल में, बड़ा अचरज होवे तिन ।
 किन पाई ना तरफ हक की, ए तो हक मासूक वतन ॥३८॥
 तीन सूरत महंमद की, गुझ हक का जानें सोए ।
 हक जानें या निसबती, और कोई जानें जो दूसरा होए ॥३९॥
 वाहेदत की ए पेहेचान, अर्स दिल कह्या मोमिन ।
 मासूक कह्या महंमद को, जो अर्स में याके तन ॥४०॥
 महामत कहे ए मोमिनो, ए निसबत इस्क सागर ।
 ल्यो प्याले हक हुकमें, पिओ फूल भर भर ॥४१॥

॥प्रकरण॥१४॥चौपाई॥१०८३॥

सागर आठमा मेहेर का

और सागर जो मेहेर का, सो सोभा अति लेत ।
 लेहेरें आवें मेहेर सागर, खूबी सुख समेत ॥१॥
 हुकम मेहेर के हाथ में, जोस मेहेर के अंग ।
 इस्क आवे मेहेर से, बेसक इलम तिन संग ॥२॥
 पूरी मेहेर जित हक की, तित और कहा चाहियत ।
 हक मेहेर तित होत है, जित असल है निसबत ॥३॥
 मेहेर होत अव्वल से, इतहीं होत हुकम ।
 जलूस साथ सब तिनके, कछू कमी न करत खसम ॥४॥
 ए खेल हुआ मेहेर वास्ते, माहें खेलाए सब मेहेर ।
 जाथें मेहेर जुदी हुई, तब होत सब जेहेर^१ ॥५॥

दोऊ मेहेर देखत खेल में, लोक देखें ऊपर का जहूर ।
 जाए अन्दर मेहेर कछू नहीं, आखिर होत हक से दूर ॥६॥
 मेहेर सोई जो बातूनी, जो मेहेर बाहेर और माहें ।
 आखिर लग तरफ धनी की, कमी कछुए आवत नाहें ॥७॥
 मेहेर होत है जिन पर, मेहेर देखत पांचों तत्व ।
 पिंड ब्रह्माण्ड सब मेहेर के, मेहेर के बीच बसत ॥८॥
 दुख रूपी इन जिमी में, दुख न काहूं देखत ।
 बात बड़ी है मेहेर की, जो दुख में सुख लेवत ॥९॥
 सुख में तो सुख दायम, पर स्वाद न आवत ऊपर ।
 दुख आए सुख आवत, सो मेहेर खोलत नजर ॥१०॥
 इन दुख जिमी में बैठके, मेहेरें देखें दुख दूर ।
 कायम सुख जो हक के, सो मेहेर करत हजूर ॥११॥
 मैं देख्या दिल विचार के, इस्क हक का जित ।
 इस्क मेहेर से आइया, अव्वल मेहेर है तित ॥१२॥
 अपना इलम जिन देत हैं, सो भी मेहेर से बेसक ।
 मेहेर सब बिध ल्यावत, जित हुकम जोस मेहेर हक ॥१३॥
 जाको लेत हैं मेहेर में, ताए पेहेले मेहेरें बनावें वजूद ।
 गुन अंग इंद्री मेहेर की, रूह मेहेर फूंकत माहें बूद^१ ॥१४॥
 मेहेर सिंघासन बैठक, और मेहेर चँवर सिर छत्र ।
 सोहोवत सैन्या मेहेर की, दिल चाहे मेहेर बाजंत्र ॥१५॥
 बोली बोलावें मेहेर की, और मेहेरै का चलन ।
 रात दिन दोऊ मेहेर में, होए मेहेरें मिलावा रूहन ॥१६॥
 बंदगी जिकर मेहेर की, ए मेहेर हक हुकम ।
 रूहें बैठी मेहेर छाया मिने, पिएं मेहेर रस इस्क इलम ॥१७॥

जित मेहेर तित सब है, मेहेर अव्वल लग आखिर ।
सोहोबत मेहेर देवहीं, कहूं मेहेर सिफत क्यों कर ॥१८॥
ए जो दरिया मेहेर का, बातून जाहेर देखत ।
सब सुख देखत तहां, मेहेर जित बसत ॥१९॥
बीच नाबूद दुनी के, आई मेहेर हक खिलवत ।
तिन से सब कायम हुए, मेहेरै की बरकत ॥२०॥
बरनन करूं क्यों मेहेर की, सिफत ना पोहोंचत ।
ए मेहेर हक की बातूनी, नजर माहें बसत ॥२१॥
ए मेहेर करत सब जाहेर, सब का मता तोलत ।
जो किन कानों ना सुन्या, सो मेहेर मगज खोलत ॥२२॥
बरनन करूं क्यों मेहेर की, जो बसत हक के दिल ।
जाको दिल में लेत हैं, तहां आवत न्यामत सब मिल ॥२३॥
बरनन करूं क्यों मेहेर की, जो बसत है माहें हक ।
जाको निवाजें मेहेर में, ताए देत आप माफक ॥२४॥
बात बड़ी है मेहेर की, जित मेहेर तित सब ।
निमख ना छोड़ें नजर से, इन ऊपर कहा कहूं अब ॥२५॥
जहां आप तहां नजर, जहां नजर तहां मेहेर ।
मेहेर बिना और जो कछू, सो सब लगे जेहेर ॥२६॥
बात बड़ी है मेहेर की, मेहेर होए ना बिना अंकूर ।
अंकूर सोई हक निसबत, माहें बसत तजल्ला नूर ॥२७॥
ज्यों मेहेर त्यों जोस है, ज्यों जोस त्यों हुकम ।
मेहेर रहेत नूर बल लिए, तहां हक इस्क इलम ॥२८॥
मीठा सुख मेहेर सागर, मेहेर में हक आराम ।
मेहेर इस्क हक अंग है, मेहेर इस्क प्रेम काम ॥२९॥

काम बड़े इन मेहेर के, ए मेहेर इन हक ।
 मेहेर होत जिन ऊपर, ताए देत आप माफक ॥३०॥
 मेहेरें खेल बनाइया, वास्ते मेहेर मोमिन ।
 मेहेरें मिलावा हुआ, और मेहेर फरिस्तन ॥३१॥
 मेहेरें रसूल होए आइया, मेहेरें हक लिए फुरमान ।
 कुंजी ल्याए मेहेर की, करी मेहेरें हक पेहेचान ॥३२॥
 दर्इ मेहेरें कुंजी इमाम को, तीनों महंमद सूरत ।
 मेहेरें दर्इ हिकमत^१, करी मेहेरें जाहेर हकीकत^२ ॥३३॥
 सो फुरमान मेहेरें खोलिया, करी जाहेर मेहेरें आखिरत ।
 मेहेरें समझे मोमिन, करी मेहेरें जाहेर खिलवत ॥३४॥
 ए मेहेर मोमिनो पर, एही खासल खास उमत ।
 दर्इ मेहेरें भिस्त सबन को, सो मेहेर मोमिनो बरकत ॥३५॥
 मेहेरें खेल देख्या मोमिनो, मेहेरें आए तले कदम ।
 मेहेरें कयामत करके, मेहेरें हँसके मिले खसम ॥३६॥
 मेहेर की बातें तो कहूं, जो मेहेर को होवे पार ।
 मेहेरें हक न्यामत सब मापी, मेहेरें मेहेर को नहीं सुमार ॥३७॥
 जो मेहेर ठाढ़ी रहे, तो मेहेर मापी जाए ।
 मेहेर पल में बड़े कोट गुनी, सो क्यों मेहेरें मेहेर मपाए ॥३८॥
 मेहेरें दिल अर्स किया, दिल मोमिन मेहेर सागर ।
 हक मेहेर ले बैठे दिल में, देखो मोमिनो मेहेर कादर ॥३९॥
 बात बड़ी है मेहेर की, हक के दिल का प्यार ।
 सो जाने दिल हक का, या मेहेर जाने मेहेर को सुमार ॥४०॥
 जो एक वचन कहूं मेहेर का, ले मेहेर समझियो सोए ।
 अपार उमर अपार जुबांए, मेहेर को हिसाब न होए ॥४१॥

निपट बड़ा सागर आठमा, ए मेहेर को नीके जान ।
 जो मेहेर होए तुझ ऊपर, तो मेहेर की होय पेहेचान ॥४२॥
 सात सागर बरनन किए, सागर आठमा बिना हिसाब ।
 ए मेहेर को पार न आवहीं, जो कई कोट करूँ किताब ॥४३॥
 ए मेहेर मोमिन जानहीं, जिन ऊपर है मेहेर ।
 ताको हक की मेहेर बिना, और देखें सब जेहेर ॥४४॥
 महामत कहे ए मोमिनोँ, ए मेहेर बड़ा सागर ।
 सो मेहेर हक कदमों तले, पिओ अमीरस हक नजर ॥४५॥

॥प्रकरण॥१५॥चौपाई॥११२८॥

प्रकरण तथा चौपाइयों का संपूर्ण संकलन
 प्रकरण ४३९, चौपाई १४१६५

॥सागर सम्पूर्ण॥